15-सूरत-हिज्र

इस मक्की सूरत में '6' रूकू और '99' आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

الٓرٰ ۚ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ وَ قُرْاٰنٍ مُّبِيْنٍ ۝١ رُبَمَا يَوَدُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْ كَانُوْا مُسْلِمِيْنَ ۝٢ ذَرْهُمْ يَاْكُلُوْا وَ
يَتَمَتَّعُوْا وَ يُلْهِهِمُ الْاَمَلُ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ۝٣ وَ مَاۤ اَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ اِلَّا وَ لَهَا كِتَابٌ مَّعْلُوْمٌ ۝٤ مَا تَسْبِقُ مِنْ
اُمَّةٍ اَجَلَهَا وَ مَا يَسْتَاْخِرُوْنَ ۝٥ وَ قَالُوْا يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْ نُزِّلَ عَلَيْهِ الذِّكْرُ اِنَّكَ لَمَجْنُوْنٌ ۝٦ لَوْ مَا تَاْتِيْنَا
بِالْمَلٰٓئِكَةِ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۝٧ مَا نُنَزِّلُ الْمَلٰٓئِكَةَ اِلَّا بِالْحَقِّ وَ مَا كَانُوْۤا اِذًا مُّنْظَرِيْنَ ۝٨ اِنَّا نَحْنُ
نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَ اِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ ۝٩

आयत न० 01 से 09

अलिफ़ लाम रा (इस का मतलब तो अल्लाह को पता है) **ये आयते हैं** (अल्लाह की) **किताब की और रौशन क़ुरआन की(01)** (जब आख़रत में काफ़िरों पर तरह-तरह का अज़ाब होगा तो) **काफ़िर लोग बार-बार तमन्ना करेंगे** (और पछताएंगे) **कि क्या अच्छा होता अगर वो** (यानी हम दुनिया में) **मुसलमान होते(02) आप** (दुनिया में उनके कुफ़्र पर ग़म न कीजिए और) **उन को उनके हाल पर रहने दीजिए कि वो अच्छी तरह खालें और मज़े उड़ा लें और सोची उम्मीदें उन को भूल में डाल रक्खें उन को अभी** (मरने के साथ ही) **असलीयत पता चल जाएगी(03) और** (दुनिया में जो उन को उन के कुफ़्र और बुरे कामों की फ़ौरन सज़ा नहीं मिलती उसकी वजह यह है कि अल्लाह तआ़ला ने सज़ा का वक़्त तय कर रक्खा है अभी वो वक़्त नहीं आया और) **हमने जितनी बस्तियां** (कुफ़्र की वजह से) **हलाक की हैं उन सब के लिए एक तय वक़्त लिखा हुआ होता रहा है(04)** (और हमारा क़ानून है कि) **कोई उम्मत अपने तय वक़्त से न पहले हलाक हुई है और न** (उससे) **आगे जा सकती है** (बल्कि तय वक़्त पर हलाक हुई है इसी तरह जब उन का वक़्त आजाएगा उन को भी सज़ा दी जाएगी)**(05) और इन** (मक्के के) **काफ़िरों ने** (रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से) **यह कहा कि ऐ वो इन्सान जिस पर** (उसके दावे के हिसाब से) **क़ुरआन**

उतारा गया है तुम (नऊज़ुबिल्लाह पैग़म्बरी का ग़लत दावा करते हो और) **दीवाने हो**(06) (वर्ना) **अगर तुम** (इस दावे में) **सच्चे हो तो** (अपनी सच्चाई की गवाही के लिए) **हमारे पास फ़रिशता क्यों नहीं लाते**(07) (अल्लाह तआला जवाब देते हैं कि) **हम फ़रिशतों को** (जिस तरह वो चाहते हैं) **सिर्फ़ फ़ैसले ही के लिए उतारा करते हैं और** (अगर ऐसा होता तो) **उस वक़्त उन को मुहलत भी न दी जाती** (बल्कि जब फ़रिशतों के आने पर भी ईमान न लाते जैसा कि उन की हालत से पता चलता है तो फ़ौरन हलाक कर दिये जाते)(08) **हमने क़ुरआन को उतारा है और** (यह दावा बिना दलील नहीं बल्कि इस का मोजिज़ा होना इस पर दलील है और क़ुरआन का एक मोजिज़ा तो यह है कि कोई इन्सान इस जैसी एक सूरत भी नहीं बना सकता और दूसरा मोजिज़ा यह है कि) **हम इस** (क़ुरआन) **की हिफ़ाज़त** (और देखभाल) **करने वाले हैं** (इसे कोई घटा बढ़ा नहीं सकता जैसा और किताबों में होता है यह एक ऐसा खुला मोजिज़ा है जिस को हर ख़ास व आम समझ सकता है)(09)।

नोटः- क़ुरआन की हिफ़ाज़त का मतलब यह है कि क़ुरआन के अलफ़ाज़ उसके माइने दोनो की हिफ़ाज़त अल्लाह ने अपनी ज़िम्मेदारी में लेली है न कोई इसके लफ़्ज़ों को घटा बढ़ा सकता है और न माइने मतलब बदल सकता है। और हदीसे रसूल असल में क़ुरआन की तफ़सीर और क़ुरआन के माइने हैं और वो अल्लाह की हिफ़ाज़त में हैं फिर यह कैसे हो सकता है कि हदीसें बर्बाद हो जाएं। जो लोग हदीसों को नाक़ाबिले ऐतबार कहते हैं वो ग़लती पर हैं।

وَ لَقَدْ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ فِیْ شِیَعِ الْاَوَّلِیْنَ ﴿۱۰﴾ وَ مَا یَاْتِیْهِمْ مِّنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا كَانُوْا بِهٖ یَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿۱۱﴾ كَذٰلِكَ
نَسْلُكُهٗ فِیْ قُلُوْبِ الْمُجْرِمِیْنَ ﴿۱۲﴾ لَا یُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَ قَدْ خَلَتْ سُنَّةُ الْاَوَّلِیْنَ ﴿۱۳﴾ وَ لَوْ فَتَحْنَا عَلَیْهِمْ بَابًا مِّنَ
السَّمَآءِ فَظَلُّوْا فِیْهِ یَعْرُجُوْنَ ﴿۱۴﴾ لَقَالُوْۤا اِنَّمَا سُكِّرَتْ اَبْصَارُنَا بَلْ نَحْنُ قَوْمٌ مَّسْحُوْرُوْنَ ﴿۱۵﴾

आयत न० 10 से 15

और (ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आप इनके झुटलाने से ग़म न कीजिए क्योंकि यह बरताव पैग़म्बरों के साथ सदा से होता चला आया है जैसा कि) **हमने आप से पहले भी पैग़म्बरों को लोगों के बहुते से गिरोहों में भेजा था**(10) **और** (उन की हालत यह थी कि) **कोई पैग़म्बर उनके पास ऐसा नहीं आया जिस का उन्होंने मज़ाक़ न उड़ाया हो** (जो कि झुटलाने की सबसे घटिया क़िस्म है)(11) **इसी तरह हम इन मुजरिमों** (यानी मक्के के काफ़िरों) **के दिलों में यह बात**

(यानी मज़ाक़ उड़ाना) **डाल देते हैं**(12) (जिस की वजह से) **ये लोग कुरआन पर ईमान नहीं लाते और यह दस्तूर पहलों से ही होता आया है** (कि पैग़म्बरों को झुटलाते रहे बस आप ग़म न करें)(13) **और** (उन की ज़िद की यह हालत है कि फ़रिशतों का आसमान से आना तो क्या इससे बढ़ कर) **अगर** (ख़ुद उन को आसमान पर भेज दिया जाए इस तरह से कि) **हम उन के लिए आसमान में कोई दरवाज़ा खोल दें फिर ये दिन के वक़्त** (जिसमें नींद और ऊंघ का भी शक न हो) **उस** (दरवाज़े) **में** (से आसमान को) **चढ़ जाएं**(14) **तब भी यह कहदें कि हमारी नज़रबन्दी कर दी गई थी** (जिससे हम अपने को आसमान पर चढ़ता हुआ देख रहे हैं और असलीयत में नहीं चढ़ रहे और नज़रबन्दी इसी बात में नहीं) **बल्कि हम लोगों पर तो बिल्कुल जादू कर रक्खा है** (अगर हम को इससे बढ़ कर भी कोई मोजिज़ा दिखाया जाएगा वो भी असल में मोजिज़ा न होगा)(15)।

नोटः- यहां यह भी मालूम हुआ कि हर गिरोह का पैग़म्बर उसी गिरोह के लोगो में से भेजा गया ताकि लोगों को उस पर भरोसा करना आसान हो। और ये पैग़म्बर भी उनके मिज़ाज को जानकर उनके सुधार के लिए सही प्रोग्राम बना सकें।

وَ لَقَدْ جَعَلْنَا فِي السَّمَآءِ بُرُوْجًا وَّ زَيَّنّٰهَا لِلنّٰظِرِيْنَ ﴿١٦﴾ وَ حَفِظْنٰهَا مِنْ كُلِّ شَيْطٰنٍ رَّجِيْمٍ ﴿١٧﴾ اِلَّا مَنِ اسْتَرَقَ
السَّمْعَ فَاَتْبَعَهٗ شِهَابٌ مُّبِيْنٌ ﴿١٨﴾ وَ الْاَرْضَ مَدَدْنٰهَا وَ اَلْقَيْنَا فِيْهَا رَوَاسِيَ وَ اَنْۢبَتْنَا فِيْهَا مِنْ كُلِّ شَيْءٍ
مَّوْزُوْنٍ ﴿١٩﴾ وَ جَعَلْنَا لَكُمْ فِيْهَا مَعَايِشَ وَ مَنْ لَّسْتُمْ لَهٗ بِرٰزِقِيْنَ ﴿٢٠﴾ وَ اِنْ مِّنْ شَيْءٍ اِلَّا عِنْدَنَا خَزَآئِنُهٗ وَ
مَا نُنَزِّلُهٗۤ اِلَّا بِقَدَرٍ مَّعْلُوْمٍ ﴿٢١﴾ وَ اَرْسَلْنَا الرِّيٰحَ لَوَاقِحَ فَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَسْقَيْنٰكُمُوْهُ وَ مَاۤ اَنْتُمْ لَهٗ
بِخٰزِنِيْنَ ﴿٢٢﴾ وَ اِنَّا لَنَحْنُ نُحْيٖ وَ نُمِيْتُ وَ نَحْنُ الْوٰرِثُوْنَ ﴿٢٣﴾ وَ لَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَقْدِمِيْنَ مِنْكُمْ وَ لَقَدْ عَلِمْنَا
الْمُسْتَاْخِرِيْنَ ﴿٢٤﴾ وَ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَحْشُرُهُمْ اِنَّهٗ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٥﴾

आयत न० 16 से 25

और बेशक (हमारी कुदरत की निशानियों में से है कि) **हमने आसमान में बड़े-बड़े सितारे पैदा किये और देखने वालों के लिए आसमान को** (सितारों से) **सजाया**(16) **और उस** (आसमान) **की** (सितारों के वास्ते से) **हर शैतान मरदूद से हिफ़ाज़त की** (कि वहां तक वो पहुंच नहीं पाते)(17) **हां मगर कोई बात** (फ़रिशतों की) **चोरी छुपे सुन भागे तो उस के पीछे एक चमकता अंगारा**

होता (है और उसके असर से वो शैतान हलाक या बदहवास हो जाता) **है(18) और हमने ज़मीन को फैला दिया और उस** (ज़मीन) **में भारी-भारी पहाड़ रख दिये और उसमें हर क़िस्म की** (ज़रूरत की पैदावार) **एक ख़ास अन्दाज़ से उगाई(19) और हमने तुम्हारे वास्ते उस** (ज़मीन) **में रोज़गार के सामान बनाए** (जिसमें ज़िन्दगी की ज़रूरतों की सभी चीज़ें आगईं जो खाने पीने पहनने और रहने सहने की हैं) **और** (यह सामान) **उन को भी दिया जिन को तुम रोज़ी नहीं देते** (यानी वो जानदार जिनके खाने पीने का तुम इन्तिज़ाम नहीं करते)**(20) और जितनी चीज़ें** (ज़िन्दगी की ज़रूरत की) **हैं हमारे पास सब के ख़ज़ाने के ख़ज़ाने** (भरे पड़े) **हैं, और हम** (अपनी ख़ास हिकमत से) **उस** (चीज़) **को एक ख़ास हिसाब से उतारते रहते हैं(21) और हम ही हवाओं को भेजते रहते हैं जो बादल को पानी से भर देती हैं फिर हम ही आसमान से पानी बरसाते हैं फिर वो पानी तुम को पीने को देते हैं और तुम उस को जमा करके रखने वाले न थे** (कि अगली बारिश तक उस जमा पानी को बरतते रहते)**(22) और हम है कि ज़िन्दगी देते हैं और मौत देते हैं और** (सब के मरने के बाद) **हम ही बाक़ी रह जाएंगे(23) और हम ही जानते हैं तुम में से आगे बढ़ जाने वालों को और हम जानते हैं पीछे रह जाने वालों को(24) और बेशक आप का रब ही इन सब को** (क़ियामत में) **जमा करेगा, बेशक वो हिकमत वाला है** (हर आदमी को उस के हिसाब से बदला देगा और) **इल्म वाला** (है सब के कामों को जानता) **है(25)।**

नोटः- आगे बढ़ जाने वालों से मुराद नेक कामों में आगे बढ़ जाने वाले लोग हैं। हदीस में है कि अगर लोगों को मालूम हो जाता कि अज़ान कहने और नमाज़ की पहली सफ़ में खड़े होने की कितनी बड़ी फ़ज़ीलत (और सवाब) है तो सभी आदमी इसकी कोशिशश में लग जाते कि पहली ही सफ़ में खड़े हों और सबके लिए जगह न होती तो कुरा अन्दाज़ी करनी पड़ती यानी लाटरी डालनी पड़ती।

وَ لَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَاٍ مَّسْنُوْنٍ ۚ﴿۲۶﴾ وَ الْجَآنَّ خَلَقْنٰهُ مِنْ قَبْلُ مِنْ نَّارِ السَّمُوْمِ ﴿۲۷﴾ وَ اِذْ
قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓئِكَةِ اِنِّیْ خَالِقٌۢ بَشَرًا مِّنْ صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَاٍ مَّسْنُوْنٍ ﴿۲۸﴾ فَاِذَا سَوَّیْتُهٗ وَ نَفَخْتُ فِیْهِ مِنْ رُّوْحِیْ
فَقَعُوْا لَهٗ سٰجِدِیْنَ ﴿۲۹﴾ فَسَجَدَ الْمَلٰٓئِكَةُ كُلُّهُمْ اَجْمَعُوْنَ ۙ﴿۳۰﴾ اِلَّاۤ اِبْلِیْسَ ؕ اَبٰۤی اَنْ یَّكُوْنَ مَعَ السّٰجِدِیْنَ ﴿۳۱﴾ قَالَ
یٰۤاِبْلِیْسُ مَا لَكَ اَلَّا تَكُوْنَ مَعَ السّٰجِدِیْنَ ﴿۳۲﴾ قَالَ لَمْ اَكُنْ لِّاَسْجُدَ لِبَشَرٍ خَلَقْتَهٗ مِنْ صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَاٍ

مَّسْنُوْنٍ ﴿۳۳﴾ قَالَ فَاخْرُجْ مِنْهَا فَاِنَّكَ رَجِيْمٌ ﴿۳۴﴾ وَّ اِنَّ عَلَيْكَ اللَّعْنَةَ اِلٰى يَوْمِ الدِّيْنِ ﴿۳۵﴾ قَالَ رَبِّ فَاَنْظِرْنِيْۤ اِلٰى
يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ﴿۳۶﴾ قَالَ فَاِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِيْنَ ﴿۳۷﴾ اِلٰى يَوْمِ الْوَقْتِ الْمَعْلُوْمِ ﴿۳۸﴾ قَالَ رَبِّ بِمَاۤ اَغْوَيْتَنِيْ لَاُزَيِّنَنَّ
لَهُمْ فِي الْاَرْضِ وَ لَاُغْوِيَنَّهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿۳۹﴾ اِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمُ الْمُخْلَصِيْنَ ﴿۴۰﴾ قَالَ هٰذَا صِرَاطٌ عَلَيَّ مُسْتَقِيْمٌ ﴿۴۱﴾
اِنَّ عِبَادِيْ لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطٰنٌ اِلَّا مَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْغٰوِيْنَ ﴿۴۲﴾ وَ اِنَّ جَهَنَّمَ لَمَوْعِدُهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿۴۳﴾ لَهَا
سَبْعَةُ اَبْوَابٍ لِكُلِّ بَابٍ مِّنْهُمْ جُزْءٌ مَّقْسُوْمٌ ﴿۴۴﴾

आयत न० 26 से 44

और हमने इन्सान को (यानी उन के बाप आदम अलैहिस्सलाम को) **गारे के ख़मीर की खनखनाती मिट्टी से पैदा किया** (यानी पहले गारे का ख़मीर बनाया कि उसमें बू आने लगी फिर वो सूख कर खनखन बोलने लगा जैसे मिट्टी के बर्तन चुटकी मारने से बजा करते हैं फिर उस सूखे गारे से आदम का पुतला बनाया जो बड़ी क़ुदरत की निशानी है)(26) **और जिन्नात को** (यानी उनके बाप को) **उस के पहले** (यानी आदम अलैहिस्सलाम से पहले) **आग से कि वो एक गर्म हवा थी पैदा कर चुके थे(27) और वो वक़्त याद कीजिए जब आप के रब ने फ़रिशतों से कहा कि मैं एक इन्सान को** (यानी उसके पुतले को) **गारे के ख़मीर की बजती हुई मिट्टी से पैदा करने वाला हूं(28) तो मैं जब उस को पूरा बना चुकूं और उसमें अपनी** (तरफ़ से) **जान डाल दूं तो सब उसके सामने सजदे में गिर जाना(29) सो** (जब अल्लाह तआ़ल ने उस को बना लिया तो) **सारे के सारे फ़रिशतों ने** (आदम अ़लैहिस्सलाम को) **सजदा किया(30) सिवाए इबलीस के, कि उसने इस बात को न माना कि सजदा करने वालों के साथ शामिल हो** (यानी सजदा न किया)(31) **अल्लाह तआ़ला ने कहा ऐ इबलीस तू किस लिए सजदा करने वालों में शामिल न हुआ(32) कहने लगा कि मैं ऐसा** (गिरा हुआ) **नहीं कि** (उस) **इन्सान को सजदा करूं जिस को आपने गारे के ख़मीर की बजती हुई मिट्टी से पैदा किया है** (और मैं नूरानी चीज़ आग से पैदा हुआ हूं तो उस को सजदा कैसे करूं)(33) **कहा** (अल्लाह तआ़ला ने) **तो** (अच्छा फिर) **आसमान से निकल क्यूंकि बेशक तू** (इस हरकत से) **मरदूद हो गया(34) और बेशक तुझ पर** (मेरी) **लानत क़ियामत तक रहेगी** (यानी तौबा की तौफ़ीक़ न होगी)(35) **कहने लगा या रब** (अगर मुझ को आदम अ़लैहिस्सलाम की वजह से मरदूद किया है) **तो फिर मुझ को** (ज़िन्दा रहने की) **मुहलत दीजिए क़ियामत के दिन तक** (ताकि उनसे और उनकी औलाद से अच्छी तरह बदला लूं)(36) **कहा** (अल्लाह

तआ़ला ने जब तू मुहलत मांगता है) **तो** (जा) **तुझ को मुहलत** (तो) **देदी गई(37)** (मगर) **ऐसे दिन तक जो हमें पता है(38) कहने लगा या रब मेरे क्योंकि आप ने मुझ को गुमराह किया है** (इसलिए अब) **मैं क़सम खाता हूं कि मैं दुनिया में उन की** (यानी आदम और आदम की औलाद की) **नज़र में गुनाह को अच्छा करके दिखाऊंगा और उन सब को गुमराह करूंगा(39) सिवाए आप के उन बन्दों के जो उन में चुन लिये गये हैं** (यानी आपने उन को मेरे असर से बचा रक्खा है)**(40) कहा** (अल्लाह तआ़ला ने) **कि** (हां) **यह** (चुना जाना जिस का तरीक़ा नेक काम करना और पूरी ताबेदारी करना है) **एक सीधा रास्ता है जो मुझ तक पहुंचता** (है यानी उस पर चल कर हमारा बन जाता) **है(41) बेशक मेरे उन बन्दों पर तेरा ज़रा भी बस न चलेगा सिवाए उन गुमराह लोगों के जो तेरी राह पर चलने लगें(42) और** (जो लोग तेरी राह पर चलेंगे) **उन सब का ठिकाना जहन्नम है(43) जिस के सात दरवाज़े हैं, हर दरवाज़े** (में से जाने) **के लिए उन लोगों के अलग-अलग हिस्से हैं** (कि कोई किसी दरवाज़े से जाएगा कोई किसी दरवाज़े से)(44)।

नोटः- अल्लाह के नेक बन्दों पर शैतान का ऐसा असर नहीं होता कि वो अपनी ग़लती पर किसी वक़्त भी तौबा न करें।

اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ جَنّٰتٍ وَّ عُيُوْنٍ ﴿٤٥﴾ اُدْخُلُوْهَا بِسَلٰمٍ اٰمِنِيْنَ ﴿٤٦﴾ وَ نَزَعْنَا مَا فِيْ صُدُوْرِهِمْ مِّنْ غِلٍّ اِخْوَانًا عَلٰى
سُرُرٍ مُّتَقٰبِلِيْنَ ﴿٤٧﴾ لَا يَمَسُّهُمْ فِيْهَا نَصَبٌ وَّ مَا هُمْ مِّنْهَا بِمُخْرَجِيْنَ ﴿٤٨﴾ نَبِّئْ عِبَادِيْۤ اَنِّيْۤ اَنَا الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴿٤٩﴾
وَ اَنَّ عَذَابِيْ هُوَ الْعَذَابُ الْاَلِيْمُ ﴿٥٠﴾

आयत न० 45 से 50

बेशक अल्लाह तआ़ला से डरने वाले (यानी ईमान वाले) **बाग़ों और झरनों में** (रहते होंगे चाहे शुरू ही से अगर गुनाह न हो या मुआफ़ हो गया हो और चाहे गुनाह की सज़ा भुगतने के बाद दाख़िल) **होंगे(45)** (और उन से कहा जाएगा कि) **तुम इन** (जन्नतों) **में सलामती और अमन के साथ दाख़िल हो जाओ** (यानी इस वक़्त भी हर नापसन्द चीज़ से सलामती है और आगे भी किसी बुराई के पहुंचने का ख़तरा नहीं)**(46) और** (दुनिया में कुछ बातों में) **उन के दिलों में जो नाराज़गी थी हम वो सब** (उन के दिलों से जन्नत में दाख़िल होने से पहले ही) **दूर कर देंगे कि भाई-भाई की तरह** (प्यार मुहब्बत से) **रहेंगे** (और) **तख़्तों पर आमने सामने बैठा करेंगे(47) वहां उन को**

ज़रा भी तकलीफ़ न पहुंचेगी और न वहां से निकाले जाएंगे(48) (ऐ पैग़म्बर) **आप मेरे बन्दों को ख़बर दे दीजिए कि मैं बड़ा मुआफ़ करने वाला और रहमत वाला** (भी) **हूं**(49) **और यह** (भी बता दीजिए) **कि मेरी सज़ा** (भी) **दर्दनाक सज़ा है** (ताकि यह ख़बर सुन कर ईमान और नेकी से लगाव और कुफ़्र व गुनाह से डर पैदा हो)(50)।

नोटः- दुनिया की सैर तफ़रीह से इन्सान कभी न कभी थक जाता है चाहे कितनी ही मज़ेदार हो लेकिन जन्नत में कभी थकान न होगी। और न वहां की नेमतें कभी ख़त्म होगीं और न वहां से कभी उस को निकाला जाएगा।

وَ نَبِّئْهُمْ عَنْ ضَيْفِ اِبْرٰهِيْمَ ۘ﴿۵۱﴾ اِذْ دَخَلُوْا عَلَيْهِ فَقَالُوْا سَلٰمًا ؕ قَالَ اِنَّا مِنْكُمْ وَجِلُوْنَ ﴿۵۲﴾ قَالُوْا لَا تَوْجَلْ اِنَّا
نُبَشِّرُكَ بِغُلٰمٍ عَلِيْمٍ ﴿۵۳﴾ قَالَ اَبَشَّرْتُمُوْنِيْ عَلٰۤى اَنْ مَّسَّنِيَ الْكِبَرُ فَبِمَ تُبَشِّرُوْنَ ﴿۵۴﴾ قَالُوْا بَشَّرْنٰكَ بِالْحَقِّ فَلَا
تَكُنْ مِّنَ الْقٰنِطِيْنَ ﴿۵۵﴾ قَالَ وَ مَنْ يَّقْنَطُ مِنْ رَّحْمَةِ رَبِّهٖۤ اِلَّا الضَّآلُّوْنَ ﴿۵۶﴾ قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ اَيُّهَا الْمُرْسَلُوْنَ ﴿۵۷﴾
قَالُوْۤا اِنَّاۤ اُرْسِلْنَاۤ اِلٰى قَوْمٍ مُّجْرِمِيْنَ ۙ﴿۵۸﴾ اِلَّاۤ اٰلَ لُوْطٍ ؕ اِنَّا لَمُنَجُّوْهُمْ اَجْمَعِيْنَ ۙ﴿۵۹﴾ اِلَّا امْرَاَتَهٗ قَدَّرْنَاۤ ۙ اِنَّهَا
لَمِنَ الْغٰبِرِيْنَ ؑ﴿۶۰﴾ فَلَمَّا جَآءَ اٰلَ لُوْطِ ِالْمُرْسَلُوْنَ ۙ﴿۶۱﴾ قَالَ اِنَّكُمْ قَوْمٌ مُّنْكَرُوْنَ ﴿۶۲﴾ قَالُوْا بَلْ جِئْنٰكَ بِمَا كَانُوْا
فِيْهِ يَمْتَرُوْنَ ﴿۶۳﴾ وَ اَتَيْنٰكَ بِالْحَقِّ وَ اِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ﴿۶۴﴾ فَاَسْرِ بِاَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِّنَ الَّيْلِ وَ اتَّبِعْ اَدْبَارَهُمْ وَ لَا
يَلْتَفِتْ مِنْكُمْ اَحَدٌ وَّ امْضُوْا حَيْثُ تُؤْمَرُوْنَ ﴿۶۵﴾ وَ قَضَيْنَاۤ اِلَيْهِ ذٰلِكَ الْاَمْرَ اَنَّ دَابِرَ هٰۤؤُلَآءِ مَقْطُوْعٌ
مُّصْبِحِيْنَ ﴿۶۶﴾ وَ جَآءَ اَهْلُ الْمَدِيْنَةِ يَسْتَبْشِرُوْنَ ﴿۶۷﴾ قَالَ اِنَّ هٰۤؤُلَآءِ ضَيْفِيْ فَلَا تَفْضَحُوْنِ ۙ﴿۶۸﴾ وَ اتَّقُوا اللّٰهَ وَ لَا
تُخْزُوْنِ ﴿۶۹﴾ قَالُوْۤا اَوَ لَمْ نَنْهَكَ عَنِ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۷۰﴾ قَالَ هٰۤؤُلَآءِ بَنٰتِيْۤ اِنْ كُنْتُمْ فٰعِلِيْنَ ؕ﴿۷۱﴾ لَعَمْرُكَ اِنَّهُمْ لَفِيْ
سَكْرَتِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ﴿۷۲﴾ فَاَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ مُشْرِقِيْنَ ۙ﴿۷۳﴾ فَجَعَلْنَا عَالِيَهَا سَافِلَهَا وَ اَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ حِجَارَةً
مِّنْ سِجِّيْلٍ ؕ﴿۷۴﴾ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّلْمُتَوَسِّمِيْنَ ﴿۷۵﴾ وَ اِنَّهَا لَبِسَبِيْلٍ مُّقِيْمٍ ﴿۷۶﴾ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً
لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ؕ﴿۷۷﴾

आयत न० 51 से 77

और (ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **आप इन** (लोगों) **को इब्राहीम** (अ़लैहिस्सलाम) **के महमानों** (के क़िस्से) **की भी ख़बर दीजिए**(51) (वो क़िस्सा उस वक़्त हुआ था) **जब कि वो** (महमान

जो कि असल में फ़रिशते थे और इन्सानी रूप में होने की वजह से हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने उन को महमान समझा) **उनके** (यानी इब्राहीम अलैहिस्सलाम के) **पास आए फिर** (आकर) **उन्होंने सलाम किया,** (इब्राहीम अलैहिस्सलाम उन को महमान समझ कर फ़ौरन उन के लिए खाना लाए मगर चूंकि फ़रिशते थे उन्होंने खाया नहीं तब) **इब्राहीम** (अ़लैहिस्सलाम दिल में डरे ये लोग कहीं दुशमन न हों और) **कहने लगे कि हमें तो तुम से डर लग रहा है**(52) **उन्होंने कहा कि आप डरें नहीं क्योंकि हम** (फ़रिशते हैं अल्लाह की तरफ़ से ख़ुशख़बरी लेकर आए हैं और) **आप को एक बेटे की ख़ुशख़बरी देते हैं जो बड़ा आ़लिम होगा** (मतलब यह कि पैग़म्बर होगा क्योंकि आदमियों में सब से ज़्यादा इल्म पैग़म्बरों को होता है, मुराद इस बेटे से इसहाक़ अलैहिस्सलाम हैं)(53) **इब्राहीम** (अलैहिस्सलाम) **कहने लगे कि क्या तुम मुझ को इस हालत में** (बेटे की) **ख़ुशख़बरी देते हो कि मुझ पर बुढ़ापा आ गया तो** (ऐसी हालत में मुझ को) **किस** (अजीब) **चीज़ की ख़ुशख़बरी देते हो**(54) **वो** (फ़रिशते) **बोले कि हम आप को सच्ची बात की ख़ुशख़बरी देते हैं सो आप नाउम्मीद न हों** (यानी अपने बुढ़ापे पर नज़र न कीजिए)(55) **इब्राहीम** (अ़लैहिस्सलाम) **ने कहा कि भला अपने रब की रहमत से कौन ना उम्मीद होता है सिवाए गुमराह लोगों के**(56) (फिर पैग़म्बरी के इल्म से जान गये कि फ़रिशते कुछ और ख़ास काम भी आए हैं इसलिए) **कहने लगे तो** (यह बताओ कि) **अब तुम को क्या ख़ास काम है ऐ फ़रिशतो!**(57) **फ़रिशतों ने कहा कि हम एक मुजरिम क़ौम** (यानी क़ौमे लूत) **की तरफ़** (उन को सज़ा देने के लिए) **भेजे गये हैं**(58) **मगर लूत** (अ़लैहिस्सलाम) **का ख़ानदान कि हम उन सब को** (अज़ाब से) **बचा लेंगे** (यानी उन को बचने का तरीक़ा बता देंगे कि मुजरिमों से अलग हो जाएं)(59) **सिवाए उन की** (यानी लूत अलैहिस्सलाम की) **बीवी के कि उस के बारे में हम ने तय कर रक्खा है कि वो ज़रूर उसी मुजरिम क़ौम में रह जाएगी** (और उन के साथ अज़ाब में पकड़ी जाएगी)(60) **फिर जब वो फ़रिशते लूत** (अ़लैहिस्सलाम) **के ख़ानदान वालों के पास आए**(61) (तो चूंकि इन्सानी रूप में थे इसलिए लूत अलैहिस्सलाम) **कहने लगे तुम तो अजनबी आदमी** (लगते) **हो** (देखिये शहर वाले तुम्हारे साथ क्या सलूक करते हैं क्योंकि ये अजनबी लोगों को परीशान किया करते हैं)(62) **उन्होंने कहा नहीं** (हम आदमी नहीं) **बल्कि हम** (फ़रिशते हैं) **आप के पास वो चीज़** (यानी वो अज़ाब) **लेकर आए हैं जिसमें ये लोग शक किया करते थे**(63) **और हम आपके पास अटल फैसला** (यानी अज़ाब) **लेकर आए हैं और हम** (इस ख़बर देने में) **बिल्कुल सच्चे हैं**(64) **सो आप रात के किसी हिस्से में अपने घर वालों को लेकर** (यहां से) **चले जाइये और आप सब के पीछे हो लीजिए** (ताकि कोई रह न जाए या लौट न जाए)

और तुम में से कोई पीछे मुड़ कर भी न देखे (यानी सब जल्दी चले जाएं) **और जिस जगह** (जाने का) **तुम को हुक्म हुआ है उस तरफ़ सब के सब चले जाओ(65) और हमने** (उन फ़रिशतों के वास्ते से) **लूत** (अ़लैहिस्सलाम) **के पास यह हुक्म भेजा कि सुबह होते ही उन की जड़ कट जाएगी** (यानी बिल्कुल बर्बाद व हलाक हो जाएंगे)(66) **और** (उधर) **शहर के लोग** (यह ख़बर सुनकर कि लूत अलैहिस्सलाम के यहां हसीन लड़के आए हैं) **बहुत ख़ुशियां मनाते हुए** (अपनी बुरी नीयत व इरादे के साथ लूत अलैहिस्सलाम के घर) **आपहुंचे(67) लूत** (अलैहिस्सलाम) **ने** (जो अब तक उन को इन्सान और अपना महमान समझ रहे थे कि फ़रिशता होना बाद में पता चला था) **कहा कि ये लोग मेरे महमान हैं** (इन को परीशान करके) **मुझ को** (आम लोगों में) **रूसवा न करो** (क्योंकि महमान की तौहीन में मेज़बान की तौहीन होती है)(68) **तुम अल्लाह से डरो और मुझ को** (इन महमानों की नज़र में) **ज़लील मत करो** (कि महमान यह समझेंगे कि अपनी बस्ती के लोगों की नज़र में इन की कोई इ़ज़्ज़त नहीं)(69) **वो कहने लगे** (यह रूसवाई खुद आपकी ख़रीदी हुई है कि उन को महमान बनाया और) **क्या हम आप को दुनिया भर के लोगों** (को अपना महमान बनाने) **से** (बहुत बार) **मना नहीं कर चुके** (न आप उन को महमान बनाते न इस रूसवाई की नौबत आती)(70) **लूत** (अ़लैहिस्सलाम) **ने कहा कि** (तुम्हारी ज़रूरत पूरी करने के लिए) **ये मेरी** (बहू) **बेटियां** (हैं जो तुम्हारे घरों में) **मौजूद हैं अगर तुम मेरा कहना मानो** (तो शराफ़त के साथ अपनी औरतों से अपना मतलब पूरा करो मगर वो किस की सुनते थे)(71) **आप की जान की क़सम** (ऐ पैग़म्बर) **सच यह है कि वो अपनी मस्ती में अन्धे बने हुए** (थे किसी की कब सुनने वाले) **थे(72) बस सूरज निकलते-निकलते उन को सख़्त आवाज़ ने आदबाया(73) फिर** (उस के बाद) **हम ने उन बस्तियों** (की ज़मीन को उलट कर उन) **का ऊपर का तख़्ता** (तो) **नीचे कर दिया** (और नीचे का तख़्ता ऊपर कर दिया) **और उन लोगों पर कंकर के पत्थर बरसाए(74) इस क़िस्से में बहुत सी निशानियां है सबक़ लेने वालों के लिए** (जैसे एक तो यह कि बुरे काम का नतीजा आख़िरकार बुरा होता है अगर कुछ दिन की ढील मिल जाए तो इससे धोका न खाना चाहिए दूसरे यह कि सदा रहने वाली इ़ज़्ज़त व चैन आराम सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला पर ईमान लाने और उसका कहना मानने में है तीसरे यह कि अल्लाह तआ़ला की क़ुदरत के क़ब्ज़े में सब कुछ है वो जो चाहे कर सकता है)(75) **और ये बस्तियां** (ऐसे) **सीधे रास्ते पर** (हैं जिस पर लोग आते जाते रहते) **हैं(76) बेशक इस** (क़िस्से) **में ईमान वालों के लिए बड़ी निशानी है(77)।**

नोटः- किसी इन्सान को जाइज़ नहीं कि वो अल्लाह के सिवा किसी और की क़सम खाए क्योंकि क़सम उसकी खाई जाती हैं जिसको सब से ज़्यादा बड़ा समझा जाए और ज़ाहिर है सबसे ज़्यादा बड़ा सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला ही हो सकता है। लेकिन अल्लाह तआ़ला अपनी मख़लूक़ में से किसी की क़सम खा सकते हैं जिससे उस चीज़ की बड़ाई ज़ाहिर होती है तो यहां मालूम हुआ कि अल्लाह के नज़दीक आपका बड़ा रूतबा है। जो आपकी जान की क़सम खाई है।

وَ اِنْ كَانَ اَصْحٰبُ الْاَيْكَةِ لَظٰلِمِيْنَ ۙ﴿۷۸﴾ فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ ۘ وَ اِنَّهُمَا لَبِاِمَامٍ مُّبِيْنٍ ؕ﴿۷۹﴾ وَ لَقَدْ كَذَّبَ اَصْحٰبُ
الْحِجْرِ الْمُرْسَلِيْنَ ۙ﴿۸۰﴾ وَ اٰتَيْنٰهُمْ اٰيٰتِنَا فَكَانُوْا عَنْهَا مُعْرِضِيْنَ ۙ﴿۸۱﴾ وَ كَانُوْا يَنْحِتُوْنَ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوْتًا
اٰمِنِيْنَ ﴿۸۲﴾ فَاَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ مُصْبِحِيْنَ ۙ﴿۸۳﴾ فَمَاۤ اَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ؕ﴿۸۴﴾ وَ مَا خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَ
الْاَرْضَ وَ مَا بَيْنَهُمَاۤ اِلَّا بِالْحَقِّ ؕ وَ اِنَّ السَّاعَةَ لَاٰتِيَةٌ فَاصْفَحِ الصَّفْحَ الْجَمِيْلَ ﴿۸۵﴾ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْخَلّٰقُ
الْعَلِيْمُ ﴿۸۶﴾

आयत न० 78 से 86

और ऐका (के रहने) **वाले** (यानी शुऐब अ़लैहिस्सलाम की उम्मत के लोग भी) **बड़े ज़ालिम थे**(78) **सो हमने उन से** (भी) **बदला लिया** (और उन को अज़ाब से हलाक किया), **और दोनो** (क़ौम की) **बस्तियां साफ़ सड़क पर** (मौजूद हैं और मुल्क शाम को जाते हुए रास्ते में दिखाई देती) **हैं**(79) **और हिज्र वालों ने** (भी) **पैग़म्बरों को झूटा बताया** (क्योंकि जब अपने पैग़म्बर सालिह अलैहिस्सलाम को झूटा कहा तो सब पैग़म्बरों को झूटा कहा क्योंकि सब पैग़म्बरों का असल दीन एक है)(80) **और हमने उनको अपनी** (तरफ़ से) **निशानियां दीं** (जिससे अल्लाह तआ़ला की तौहीद और सालिह अलैहिस्सलाम की पैग़म्बरी साबित होती थी) **तो वो लोग उन** (निशानियों) **से मुंह मोड़े** (ही) **रहे**(81) **और वो लोग पहाड़ों को तराश-तराश कर उनमें घर बनाते थे कि** (उनमें सब मुसीबतों से) **अमन में रहें**(82) **सो उन को सुबह के वक़्त सख़्त आवाज़** (के अज़ाब) **ने आ पकड़ा**(83) **सो उनके** (दुनिया के) **हुनर उन के कुछ भी काम न आए** (उन ही मज़बूत घरों में अज़ाब से काम तमाम हो गया)(84) **और** (ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आप इन लोगों की ज़िद और मुख़ालफ़त पर ग़म न कीजिए क्योंकि इस का एक दिन फ़ैसला होने वाला है) **हम ने आसमानों को और ज़मीन को और उनके बीच की चीज़ों को बेवजह पैदा नहीं किया** (बल्कि इस लिए पैदा

किया कि इन को देख कर पैदा करने वाले अल्लाह की क़ुदरत को सोचे और ताबेदारी करें), **और** (जो न मानें तो उनकी सज़ा के लिए) **क़ियामत ज़रूर आने वाली है** (वहां सब का अन्जाम सामने आजाएगा) **सो आप** (कुछ ग़म न कीजिए बल्कि) **भलाई के साथ** (इनकी शरारतों को) **टाल दीजिए(85) बेशक आप का रब** (ही) **सब को पैदा करने वाला** (और सब कुछ) **जानने वाला है** (सब का हाल उस को पता है आप के सब्र का भी उनकी शरारत का भी इसलिए उन से पूरा-पूरा बदला ले लेगा)(86)।

وَلَقَدْ اٰتَيْنٰكَ سَبْعًا مِّنَ الْمَثَانِيْ وَالْقُرْاٰنَ الْعَظِيْمَ ﴿٨٧﴾ لَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ اِلٰى مَا مَتَّعْنَا بِهٖۤ اَزْوَاجًا مِّنْهُمْ وَ
لَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَاخْفِضْ جَنَاحَكَ لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٨٨﴾ وَقُلْ اِنِّيْۤ اَنَا النَّذِيْرُ الْمُبِيْنُ ﴿٨٩﴾ كَمَاۤ اَنْزَلْنَا عَلَى
الْمُقْتَسِمِيْنَ ﴿٩٠﴾ الَّذِيْنَ جَعَلُوا الْقُرْاٰنَ عِضِيْنَ ﴿٩١﴾ فَوَرَبِّكَ لَنَسْـَٔلَنَّهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٩٢﴾ عَمَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٩٣﴾
فَاصْدَعْ بِمَا تُؤْمَرُ وَاَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿٩٤﴾ اِنَّا كَفَيْنٰكَ الْمُسْتَهْزِءِيْنَ ﴿٩٥﴾ الَّذِيْنَ يَجْعَلُوْنَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا
اٰخَرَ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ﴿٩٦﴾ وَلَقَدْ نَعْلَمُ اَنَّكَ يَضِيْقُ صَدْرُكَ بِمَا يَقُوْلُوْنَ ﴿٩٧﴾ فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَكُنْ مِّنَ
السّٰجِدِيْنَ ﴿٩٨﴾ وَاعْبُدْ رَبَّكَ حَتّٰى يَاْتِيَكَ الْيَقِيْنُ ﴿٩٩﴾

आयत न० 87 से 99

और (आप उन के बरताव को न देखिए बल्कि हमारी महरबानी को देखिए कि) **हमने आप को** (एक बहुत बड़ी नेमत यानी) **सात आयतें दीं जो** (नमाज़ में) **बार-बार पढ़ी जाती हैं और** (ऐसा कहिए कि) **बड़े दर्जे का क़ुरआन दिया** (है मुराद इससे सूरत फ़ातिहा) **है(87)** (और) **आप अपनी आंख उठा कर भी उस चीज़ को न देखिये जो कि हमने उन** (काफ़िरों) **में से बहुत से लोगों को बरतने के लिए दे रक्खी है** (और बहुत जल्दी उन से अलग हो जाएगी) **और उन** (की कुफ़्र की हालत) **पर** (कुछ) **ग़म न कीजिए और मुसलमानों पर महरबानी रखिए(88) और** (काफ़िरों से इतना) **कह दीजिए कि मैं तो ऐलानिया** (तुम को अल्लाह के अज़ाब से) **डराने वाला हूं(89)** (और अल्लाह की तरफ़ से तुम को यह बात पहुंचाता हूं कि वो अज़ाब जिससे हमारा पैग़म्बर डराता है हम तुम पर किसी वक़्त ज़रूर भेजेंगे) **जैसा हम ने** (वो अज़ाब) **उन लोगों पर** (पहले बहुत बार) **भेजा जिन्होंने** (अल्लाह के हुक्मों के) **हिस्से कर रक्खे थे(90) यानी आसमानी किताब के बहुत से हिस्से ठहरा दिये थे** (उन में जो मर्ज़ी के मुताबिक़ हुआ मान लिया जो मर्ज़ी के ख़िलाफ़ हुआ इनकार

कर दिया)(91) **सो** (ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **हम को आप के रब की** (यानी अपनी) **क़सम हम इन सब** (अगलों और पिछलों) **से** (क़ियामत के दिन) **ज़रूर पूछताछ करेंगे**(92) **कि** (दुनिया में) **क्या काम किये** (फिर हर एक को उस के हिसाब से सज़ा देंगे)(93) **बस आप को जिस बात** (के पहुंचाने का) **का हुक्म किया गया है उस को** (तो) **साफ़-साफ़ सुना दीजिए और** (अगर ये न मानें तो) **उन मुशरिकों** (के न मानने) **की** (ज़रा) **परवा न** (कीजिए यानी ग़म न) **कीजिए**(94) **यक़ीन रक्खो हम** (उन लोगों से बदला लेने के लिए) **आप की तरफ़ से काफ़ी हैं जो** (आप के और अल्लाह के मुख़ालिफ़ हैं जैसा कि आप पर तो) **हंसते हैं**(95) (और) **अल्लाह तआ़ला के साथ दूसरा माबूद बनाते हैं, सो उन को अभी पता चल जाएगा** (कि मज़ाक़ उड़ाने और शिर्क करने का क्या अन्जाम होता है)(96) **और बेशक हम को पता है कि ये लोग जो** (कुफ़्र व मज़ाक़ उड़ाने की) **बातें करते हैं उससे आप का जी घुटता है**(97) **सो** (इसका इलाज यह है कि) **आप अपने रब की हम्द के साथ उस की तस्बीह करते रहिए और नमाज़ें पढ़ने वालों में रहिए**(98) **और अपने रब की इबादत करते रहिए यहां तक कि** (इसी हालत में) **आप को मौत आजाए** (यानी मरते दम तक ज़िक्र व इबादत में लगे रहिए क्योंकि अल्लाह के ज़िक्र और इबादत में आख़रत के अज्र व सवाब के अलावा यह असर भी है कि दुनिया में जब इन्सान इस तरफ़ लग जाता है तो दुनिया का दुख और तकलीफ़ व मुसीबत कम हो जाती है)(99)।

नोटः- इन आयतों में सूरत फ़ातिहा को क़ुरआने अज़ीम कहने में इस तरफ़ इशारा है कि सूरत फ़ातिहा एक हैसियत से पूरा क़ुरआन है क्योंकि इस्लाम के सब उसूल इसमें समाए हुए हैं।

हदीसः- हज़रत ज़ैद बिन अरक़म से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो आदमी इख़लास (मन की सच्चाई) के साथ लाइलाह इल्लल्लाह कहेगा वो ज़रूर जन्नत में जाएगा। लोगों ने पूछा या रसूलुल्लाह इस कलिमे में इख़लास का क्या मतलब है। आप ने फ़रमाया कि जब यह कलिमा इन्सान को अल्लाह की हराम की हुई बातों और नाजाइज़ कामों से रोक दे तो वो इख़लास के साथ है।

(क़ुरतबी)

16-सूरत-नहल

इस मक्की सूरत में '16' रूकू और '128' आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

اَتٰۤى اَمْرُ اللّٰهِ فَلَا تَسْتَعْجِلُوْهُ ؕ سُبْحٰنَهٗ وَ تَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝١ يُنَزِّلُ الْمَلٰٓئِكَةَ بِالرُّوْحِ مِنْ اَمْرِهٖ عَلٰى مَنْ
يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖۤ اَنْ اَنْذِرُوْۤا اَنَّهٗ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّاۤ اَنَا فَاتَّقُوْنِ ۝٢ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ بِالْحَقِّ ؕ تَعٰلٰى عَمَّا
يُشْرِكُوْنَ ۝٣ خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ فَاِذَا هُوَ خَصِيْمٌ مُّبِيْنٌ ۝٤ وَ الْاَنْعَامَ خَلَقَهَا ۚ لَكُمْ فِيْهَا دِفْءٌ وَّ
مَنَافِعُ وَ مِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ۝٥ وَ لَكُمْ فِيْهَا جَمَالٌ حِيْنَ تُرِيْحُوْنَ وَ حِيْنَ تَسْرَحُوْنَ ۝٦ وَ تَحْمِلُ اَثْقَالَكُمْ اِلٰى بَلَدٍ
لَّمْ تَكُوْنُوْا بٰلِغِيْهِ اِلَّا بِشِقِّ الْاَنْفُسِ ؕ اِنَّ رَبَّكُمْ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۝٧ وَّ الْخَيْلَ وَ الْبِغَالَ وَ الْحَمِيْرَ لِتَرْكَبُوْهَا وَ
زِيْنَةً ؕ وَ يَخْلُقُ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝٨ وَ عَلَى اللّٰهِ قَصْدُ السَّبِيْلِ وَ مِنْهَا جَآئِرٌ ؕ وَ لَوْ شَآءَ لَهَدٰىكُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝٩

आयत न० 01 से 09

अल्लाह का हुक्म (यानी कुफ़्र की सज़ा का वक़्त नज़दीक) **आ पहुंचा सो तुम इस में** (इनकार करके) **जल्दी मत मचाओ,** (बल्कि तौहीद अपनाओ और उसकी असलीयत सुनो कि) **वो लोगों के शिर्क से पाक और बहुत ऊंचा है(01) वो अल्लाह तआ़ला फ़रिशतों** (की जिन्स यानी जिब्राईल) **को वही यानी अपना हुक्म देकर अपने बन्दों में जिस पर चाहे** (यानी पैग़म्बरों पर) **भेजते हैं** (और वो हुक्म) **यह** (है) **कि लोगों को ख़बरदार करदो कि मेरे सिवा कोई इबादत का हक़दार नहीं सो मुझसे ही डरते रहो** (यानी मेरे साथ किसी को साझी न ठहराओ वर्ना सज़ा होगी)**(02) आसमानों को और ज़मीन को** (अल्लाह तआ़ला ने बेवजह नहीं बल्कि) **हिकमत से बनाया, वो इनके शिर्क से पाक है(03)** (और) **इन्सान को मनी से बनाया फिर वो अचानक खुल्लम खुल्ला** (अल्लाह ही की ज़ात व ख़ूबियों में) **झगड़ने लगा** (यानी कुछ ऐसे भी हुए मतलब यह है कि हमारी ये नेमतें और इन्सान की तरफ़ से नाशुक्री)**(04) और उसी ने जानवरों को बनाया जिन में तुम्हारे** (लिए) **सर्दी** (से बचाव) **का भी सामान है** (कि जानवरों के बाल यानी ऊन और

खाल से इन्सान के कपड़े व जरकीन बनते हैं) **और** (इसके सिवा और) **भी बहुत से फ़ाइदे हैं** (जैसे दूध, सवारी, सामान ले जाना और दूसरे) **और उन में** (जो खाने के क़ाबिल हैं, उन को) **खाते भी हो**(05) **और उनमें तुम्हारी शान** (का सामान) **भी है जब कि शाम के वक़्त** (जंगल से घर) **लाते हो और जब कि सुबह के वक़्त** (घर से जंगल को चराने) **ले जाते हो**(06) **और वो तुम्हारे सामान भी** (लाद कर) **ऐसे शहरों को ले जाते हैं जहां तुम बिना जान को मेहनत में डाले हुए नहीं पहुंच सकते थे, बेशक तुम्हारा रब बड़ी महरबानी वाला व रहमत वाला है** (कि तुम्हारे आराम के लिए क्या-क्या सामान पैदा किये)(07) **और घोड़े और ख़च्चर और गधे भी पैदा किये ताकि उन पर सवारी करो और शान के लिए भी, और वो ऐसी ऐसी चीज़ें** (तुम्हारी सवारी और दूसरी ज़रूरतों के लिए) **बनाता है जिन की तुम को ख़बर भी नहीं** (इसमें वो सभी चीज़ें आ गईं जो पहले नहीं थी बाद में हुई या आगे ज़माने में होंगी)(08) **और** (ऊपर बताई सच्ची दलीलों से जो) **सीधा रास्ता** (दीन का साबित होता है वो ख़ास) **अल्लाह तक पहुंचता है और कुछ रास्ते** (जो कि दीन के ख़िलाफ़ हैं) **टेढ़े भी हैं** (कि उन से अल्लाह तक नहीं पहुंच सकते, बस कुछ तो सीधे रास्ते पर चलते हैं और कुछ टेढ़े रास्ते पर), **और अगर अल्लाह चाहता तो तुम सब को सीधे रास्ते तक पहुंचा देता** (मगर वो उसी को पहुंचाता है जो सीधे रास्ते का चाहने वाला हो)(09)

नोटः- मुशरिकों ने कहा था जिस अज़ाब और क़ियामत से हमें डराया जाता है हमें तो कुछ नज़र नहीं आता इस पर ये आयतें उतरीं कि अज़ाब का हुक्म नज़दीक आ पहुंचा है।

هُوَ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً لَّكُمْ مِّنْهُ شَرَابٌ وَّ مِنْهُ شَجَرٌ فِيْهِ تُسِيْمُوْنَ ﴿١٠﴾ يُنْۢبِتُ لَكُمْ بِهِ الزَّرْعَ وَ
الزَّيْتُوْنَ وَ النَّخِيْلَ وَ الْاَعْنَابَ وَ مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿١١﴾ وَ سَخَّرَ لَكُمُ الَّيْلَ
وَ النَّهَارَ ۙ وَ الشَّمْسَ وَ الْقَمَرَ ؕ وَ النُّجُوْمُ مُسَخَّرٰتٌۢ بِاَمْرِهٖ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿١٢﴾ وَ مَا ذَرَاَ
لَكُمْ فِي الْاَرْضِ مُخْتَلِفًا اَلْوَانُهٗ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّذَّكَّرُوْنَ ﴿١٣﴾ وَ هُوَ الَّذِيْ سَخَّرَ الْبَحْرَ لِتَاْكُلُوْا مِنْهُ
لَحْمًا طَرِيًّا وَّ تَسْتَخْرِجُوْا مِنْهُ حِلْيَةً تَلْبَسُوْنَهَا ۚ وَ تَرَى الْفُلْكَ مَوَاخِرَ فِيْهِ وَ لِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَ
لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿١٤﴾ وَ اَلْقٰى فِي الْاَرْضِ رَوَاسِيَ اَنْ تَمِيْدَ بِكُمْ وَ اَنْهٰرًا وَّ سُبُلًا لَّعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿١٥﴾ وَ
عَلٰمٰتٍ ؕ وَ بِالنَّجْمِ هُمْ يَهْتَدُوْنَ ﴿١٦﴾

आयत न० 10 से 16

वो (अल्लाह) **ऐसा है जिसने तुम्हारे** (फ़ाइदे के) **वास्ते आसमान से पानी बरसाया जिससे तुम को पीने को मिलता है और जिस** (की वजह) **से पेड़** (पौधे पैदा होते) **हैं जिन में तुम** (अपने जानवरों को) **चराते हो(10)** (और) **उस** (पानी) **से तुम्हारे** (फ़ाइदे के) **लिए खेती और ज़ैतून और खजूर और हर क़िस्म के फल** (ज़मीन से) **उगाता है, बेशक इन** (सब बातों) **में सोचने वालों के लिए** (तौहीद की) **दलीलें** (मौजूद) **हैं(11) और उस** (अल्लाह) **ने रात और दिन और सूरज और चान्द को तुम्हारे काम में लगा रक्खा है, और** (इसी तरह और) **सितारे** (भी) **उस के हुक्म से** (तुम्हारे) **काम पर लगे हुए हैं, बेशक इन** (सब बातों) **में** (भी) **समझदार लोगों के लिए** (तौहीद की) **कुछ दलीलें** (मौजूद) **हैं(12) और** (इसी तरह) **उन चीज़ों को भी काम में लगाया जिन को तुम्हारे** (फ़ाइदे के लिए) **ज़मीन में इस तरह पैदा किया है कि उनकी क़िस्में अलग-अलग हैं** (इसमें सभी जानवर पेड़ पौधे और दूसरे चीज़ें आ गईं)**, बेशक इन** (सब बातों) **में** (भी) **समझदार लोगों के लिए** (तौहीद की) **दलील** (मौजूद) **है(13) और वो** (अल्लाह) **ऐसा है कि उसने समन्दर को** (भी) **काम में लगा दिया ताकि उसमें से ताज़ा गोश्त** (यानी मच्छली निकाल-निकाल कर) **खाओ और** (एक यह भी फ़ाइदा है कि) **तुम कशतियों को** (चाहे छोटी हों या बड़ी जैसे बड़े जहाज़ तुम उन को) **देखते हो कि उस** (समन्दर) **में** (उसका) **पानी चीरती हुई चली जा रही हैं और** (इस तरह समन्दर को काम में लगाया) **ताकि तुम** (उसमें सोदागिरी का माल लेकर सफ़र करो और) **अल्लाह की रोज़ी तलाश करो और ताकि** (इन सब फ़ाइदों को देख कर उस का) **शुक्र** (अदा) **करो(14) और उसने ज़मीन में पहाड़ रख दिये ताकि वो** (ज़मीन) **तुम को लेकर डगमगाने** (और हिलने) **न लगे और उसने** (छोटी-छोटी) **नहरें और रास्ते बनाए ताकि** (उन रास्तों से अपने) **ठिकाने तक पहुंच सको(15) और** (उन रास्तों की पहचान के लिए) **बहुत सी निशानियां बनाईं** (जैसे पहाड़ पेड़ मकान जैसी चीज़ें जिन से रास्ता पहचाना जाता है वर्ना अगर सारी ज़मीन एक सी होती तो रास्ता कभी न पहचाना जाता)**, और सितारों से भी लोग रास्ता पता करते** (हैं जैसा कि सब जानते) **हैं(16)।**

नोटः- इशारा है कि सितारों के पैदा करने का एक फ़ाइदा यह भी है कि उन से रास्ते भी पहचाने जाते हैं।

اَفَمَنْ يَّخْلُقُ كَمَنْ لَّا يَخْلُقُ ۭ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ۝۱۷ وَ اِنْ تَعُدُّوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوْهَا ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝۱۸
وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تُسِرُّوْنَ وَمَا تُعْلِنُوْنَ ۝۱۹ وَالَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَا يَخْلُقُوْنَ شَيْـًٔا وَّهُمْ يُخْلَقُوْنَ ۝۲۰
اَمْوَاتٌ غَيْرُ اَحْيَاۗءٍ ۚ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ۙ اَيَّانَ يُبْعَثُوْنَ ۝۲۱ اِلٰـهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَالَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ
قُلُوْبُهُمْ مُّنْكِرَةٌ وَّهُمْ مُّسْتَكْبِرُوْنَ ۝۲۲ لَا جَرَمَ اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ۭ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ
الْمُسْتَكْبِرِيْنَ ۝۲۳

आयत न० 17 से 23

सो जिसने (ये सारी चीज़ें) **पैदा की हैं** (यानी अल्लाह तआ़ला) **क्या वो उन के बराबर हो सकता है जो पैदा नहीं कर सकते** (कि तुम दोनों को ख़ुदा समझने लगे तो इसमें अल्लाह तआ़ला की तौहीन है कि उस को बुतों के बराबर कर दिया), **फिर क्या तुम** (इतना भी) **नहीं समझते**(17) **और अगर तुम अल्लाह तआ़ला की** (इन) **नेमतों को गिनने लगो तो** (कभी) **न गिन सकोगे,** (मगर मुशरिक लोग शुक्र और क़द्र नहीं करते और ये जुर्म इतना बड़ा था कि मुआ़फ़ करने से मुआ़फ़ न होता लेकिन) **सचमुच अल्लाह तआ़ला बड़े मुआ़फ़ करने वाले बड़ी रहमत वाले** (हैं कि कोई शिर्क से तौबा करे तो मुआ़फ़ी हो जाती है और तौबा न करे तब भी ज़िन्दगी भर नेमतें बन्द नहीं होती) **हैं**(18) **और** (कोई नेमतें मिलने से यह न समझे कि कभी सज़ा न होगी बल्कि आख़रत मे सज़ा होगी क्योंकि) **अल्लाह तआ़ला तुम्हारी छुपी और खुली सब बातें जानते हैं** (बस उनके हिसाब से सज़ा देंगे)(19) **और जिन की ये लोग अल्लाह को छोड़ कर इबादत करते हैं वो किसी चीज़ को पैदा नहीं कर सकते और वो तो ख़ुद मख़लूक़** (हैं यानी पैदा किये गये) **हैं**(20) **वो** (बनाए हुए ख़ुदा) **मुर्दे** (बेजान) **हैं** (चाहे सदा से जैसे बुत या फ़िलहाल जैसे वो लोग जो मर चुके या जो मरेंगे जिन्नात और ईसा अलैहिस्सलाम और) **ज़िन्दा** (रहने वाले) **नहीं** (बस पैदा करने वाले तो क्या होते), **और उन** (बनाए ख़ुदाओं) **को** (इतना भी) **पता नहीं कि** (क़ियामत में) **मुर्दे कब उठाए जाएंगे**(21) (बस साबित हुआ) **तुम्हारा सच्चा माबूद एक ही माबूद है तो** (इस पर भी) **जो लोग आख़रत पर ईमान नहीं लाते** (और इसीलिए उन को डर नहीं कि तौहीद को मान लें पता चला कि) **उन के दिल** (ही ऐसे हैं कि सही बात का) **इनकार कर रहे हैं और वो** (हक़ मानने से) **घमन्ड करते हैं**(22) (और) **ज़रूरी बात है कि अल्लाह तआ़ला उन सब की खुली व छुपी बातों को जानते हैं,** (और यह भी) **सच्ची बात है कि अल्लाह तआ़ला घमन्ड़ करने वालों को पसन्द नहीं करते** (इसलिए उन को सज़ा देंगे)(23)।

وَ اِذَا قِیۡلَ لَہُمۡ مَّا ذَاۤ اَنۡزَلَ رَبُّکُمۡ ۙ قَالُوۡۤا اَسَاطِیۡرُ الۡاَوَّلِیۡنَ ﴿ۙ۲۴﴾ لِیَحۡمِلُوۡۤا اَوۡزَارَہُمۡ کَامِلَۃً یَّوۡمَ الۡقِیٰمَۃِ ۙ وَ مِنۡ
اَوۡزَارِ الَّذِیۡنَ یُضِلُّوۡنَہُمۡ بِغَیۡرِ عِلۡمٍ ؕ اَلَا سَآءَ مَا یَزِرُوۡنَ ﴿۲۵﴾ قَدۡ مَکَرَ الَّذِیۡنَ مِنۡ قَبۡلِہِمۡ فَاَتَی اللّٰہُ بُنۡیَانَہُمۡ
مِّنَ الۡقَوَاعِدِ فَخَرَّ عَلَیۡہِمُ السَّقۡفُ مِنۡ فَوۡقِہِمۡ وَ اَتٰىہُمُ الۡعَذَابُ مِنۡ حَیۡثُ لَا یَشۡعُرُوۡنَ ﴿۲۶﴾ ثُمَّ یَوۡمَ الۡقِیٰمَۃِ
یُخۡزِیۡہِمۡ وَ یَقُوۡلُ اَیۡنَ شُرَکَآءِیَ الَّذِیۡنَ کُنۡتُمۡ تُشَآقُّوۡنَ فِیۡہِمۡ ؕ قَالَ الَّذِیۡنَ اُوۡتُوا الۡعِلۡمَ اِنَّ الۡخِزۡیَ الۡیَوۡمَ
وَ السُّوۡٓءَ عَلَی الۡکٰفِرِیۡنَ ﴿ۙ۲۷﴾ الَّذِیۡنَ تَتَوَفّٰىہُمُ الۡمَلٰٓئِکَۃُ ظَالِمِیۡۤ اَنۡفُسِہِمۡ ۪ فَاَلۡقَوُا السَّلَمَ مَا کُنَّا نَعۡمَلُ مِنۡ
سُوۡٓءٍ ؕ بَلٰۤی اِنَّ اللّٰہَ عَلِیۡمٌۢ بِمَا کُنۡتُمۡ تَعۡمَلُوۡنَ ﴿۲۸﴾ فَادۡخُلُوۡۤا اَبۡوَابَ جَہَنَّمَ خٰلِدِیۡنَ فِیۡہَا ؕ فَلَبِئۡسَ مَثۡوَی
الۡمُتَکَبِّرِیۡنَ ﴿۲۹﴾

आयत न० 24 से 29

और जब उन से कहा जाता है (यानी कोई उन से पूछता है) **कि तुम्हारे रब ने क्या चीज़ उतारी है** (यानी कुरआन जिसको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह तआला का उतारा हुआ बताते हैं क्या यह सही है) **तो कहते हैं कि** (साहिब वो रब का उतारा हुआ कहां है) **वो तो बस कहानियां हैं जो पहलों से** (कही) **चली आ रही हैं(24) नतीजा इस** (कहने) **का यह होगा कि उन लोगों को क़ियामत के दिन अपने गुनाहों का पूरा बोझ और जिन अन्जान लोगों को ये लोग गुमराह कर रहे थे उनके गुनाहों का भी कुछ बोझ अपने ऊपर उठाना पड़ेगा, याद रक्खो कि जिस गुनाह को ये अपने ऊपर लाद रहे हैं वो बुरा बोझ है(25)** (और उन्होंने जो गुमराह करने के लिए चालें चली हैं तो) **जो लोग इनसे पहले हो चुके हैं उन्होंने** (भी पैग़म्बरों के मुक़ाबिले और मुख़ालफ़त में) **बड़ी-बड़ी चालें चलीं सो अल्लाह तआला ने उन** (की चालों) **का बना बनाया घर बुनियाद से ढा दिया फिर** (वो ऐसे नाकाम हुए जैसे कि) **ऊपर से उन पर** (उस घर की) **छत आपड़ी** (हो यानी जिस तरह छत आ पड़ने से सब दब कर रह जाते हैं इसी तरह वो लोग नाकाम हुए) **और** (नाकामी के सिवा) **उन पर** (अल्लाह का) **अज़ाब ऐसी तरह आया कि उन को ध्यान भी न था(26) फिर क़ियामत के दिन** (उनके लिए यह होगा कि) **अल्लाह तआला उन को रूसवा करेगा और** (उसमें से एक रूसवाई यह होगी कि उनसे) **यह कहेगा कि** (तुमने) **जो मेरे साझी** (बना रक्खे) **थे जिन के बारे में तुम** (पैग़म्बरों व मुसलमानों से) **लड़ाई झगड़ा करते थे** (वो अब) **कहां हैं,** (इस हालत को देख कर) **इल्म वाले कहेंगे कि आज पूरी रूसवाई और अज़ाब काफ़िरों पर है(27) जिन की जान फ़रिश्तों ने कुफ़्र की हालत पर निकाली थी** (यानी आख़ीर

वक़्त तक काफ़िर रहे), **फिर काफ़िर लोग ताबेदारी की बात करेंगे** (और कहेंगे) **कि हम तो कोई बुरा काम न करते थे,** (अल्लाह तआला कहेंगे कि) **क्यों नहीं बेशक अल्लाह को तुम्हारे सब कामों की पूरी ख़बर है(28) सो** (अच्छा) **जहन्नम के दरवाज़ों में** (से जहन्नम में) **दाख़िल हो जाओ** (और) **उसमें सदा-सदा को रहो, बस** (सच्चे दीन से) **घमन्ड** (और मुख़ालफ़त और मुक़ाबिला) **करने वालों का वो बुरा ठिकाना** (है बस ये ही अन्जाम तुम्हारा होना) **है(29)।**

नोटः- दूसरों को गुमराह करने वालों पर अपने गुनाहों के साथ दूसरों को गुमराह करने का वबाल भी होगा।

وَقِيْلَ لِلَّذِيْنَ اتَّقَوْا مَاذَآ اَنْزَلَ رَبُّكُمْ ؕ قَالُوْا خَيْرًا ؕ لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةٌ ؕ وَلَدَارُ
الْاٰخِرَةِ خَيْرٌ ؕ وَلَنِعْمَ دَارُ الْمُتَّقِيْنَ ۙ﴿۳۰﴾ جَنّٰتُ عَدْنٍ يَّدْخُلُوْنَهَا تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ لَهُمْ فِيْهَا مَا
يَشَآءُوْنَ ؕ كَذٰلِكَ يَجْزِي اللّٰهُ الْمُتَّقِيْنَ ۙ﴿۳۱﴾ الَّذِيْنَ تَتَوَفّٰىهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ طَيِّبِيْنَ ۙ يَقُوْلُوْنَ سَلٰمٌ عَلَيْكُمُ ۙ
ادْخُلُوا الْجَنَّةَ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۳۲﴾ هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّآ اَنْ تَاْتِيَهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ اَوْ يَاْتِيَ اَمْرُ رَبِّكَ ؕ كَذٰلِكَ
فَعَلَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ وَمَا ظَلَمَهُمُ اللّٰهُ وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿۳۳﴾ فَاَصَابَهُمْ سَيِّاٰتُ مَا عَمِلُوْا
وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿۳۴﴾

आयत न० 30 से 34

और जो लोग शिर्क से बचते हैं उन से (जो क़ुरआन के बारे में) **कहा जाता है कि तुम्हारे रब ने क्या चीज़ उतारी है, वो कहते हैं कि बड़ी भलाई** (और बरकत की चीज़) **उतारी है, जिन लोगों ने नेक काम किये हैं उन के लिए इस दुनिया में भी भलाई** (है वो भलाई सवाब का वादा और ख़ुशख़बरी) **है, और आख़रत का घर तो और ज़्यादा अच्छा** (और ख़ुशी वाला) **है, और सचमुच वो शिर्क से बचने वालों का अच्छा घर है(30) वो** (घर क्या है) **सदा रहने के बाग़ हैं जिनमें ये दाख़िल होंगे इन बाग़ों के** (पेड़ों व मकानों के) **नीचे से नहरें बहती होंगी जिस चीज़ को उन का जी चाहेगा वहां उन को मिलेगी,** (और) **इसी तरह का बदला अल्लाह तआला सब शिर्क से बचने वालों को देगा(31) जिन की रूह फ़रिशते इस हालत में निकालते हैं कि वो** (शिर्क से) **पाक** (साफ़) **होते** (हैं मतलब यह कि मरते दम तक तौहीद पर रहते) **हैं** (और) **वो** (फ़रिशते) **उन्हें सलाम करते हैं** (और कहते हैं) **तुम जन्नत में चले जाना अपने नेक कामों की वजह से(32) ये लोग** (जो अपने कुफ़्र और हटधर्मी पर जमे हैं तो ऐसा लगता है कि ये सिर्फ़)

इसी बात के इन्तिज़ार में हैं कि उनके पास (मौत के) **फ़रिशते आजाएं या आप के रब का हुक्म** (यानी क़ियामत) **आजाए** (यानी क्या मौत के वक़्त या क़ियामत में ईमान लाएंगे जब कि ईमान क़ुबूल न होगा), **उन से पहले जो लोग थे उन्होंने भी ऐसा ही किया था** (यानी कुफ़्र पर हटधर्मी), **और** (ज़िद की वजह से सज़ा पाए तो) **उन पर अल्लाह तआ़ला ने ज़रा ज़ुल्म नहीं किया लेकिन वो आप ही अपने ऊपर ज़ुल्म कर रहे** (थे कि सज़ा के काम जान-जान के करते) **थे(33) उन के बुरे कामों की उन को सज़ाएं मिलीं और जिस अज़ाब** (की ख़बर पाने) **पर वो हंसते थे उन को उसी** (अज़ाब) **ने आ घेरा** (बस ऐसा ही तुम्हारा हाल होगा)(34)।

وَ قَالَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا لَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا عَبَدْنَا مِنْ دُوْنِهٖ مِنْ شَيْءٍ نَّحْنُ وَ لَآ اٰبَآؤُنَا وَ لَا حَرَّمْنَا مِنْ دُوْنِهٖ مِنْ
شَيْءٍ ؕ كَذٰلِكَ فَعَلَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ فَهَلْ عَلَى الرُّسُلِ اِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿۳۵﴾ وَ لَقَدْ بَعَثْنَا فِيْ كُلِّ اُمَّةٍ
رَّسُوْلًا اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَ اجْتَنِبُوا الطَّاغُوْتَ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ هَدَى اللّٰهُ وَ مِنْهُمْ مَّنْ حَقَّتْ عَلَيْهِ الضَّلٰلَةُ ؕ
فَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ﴿۳۶﴾ اِنْ تَحْرِصْ عَلٰى هُدٰىهُمْ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ
مَنْ يُّضِلُّ وَ مَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿۳۷﴾ وَ اَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ ۙ لَا يَبْعَثُ اللّٰهُ مَنْ يَّمُوْتُ ؕ بَلٰى وَعْدًا
عَلَيْهِ حَقًّا وَّ لٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۳۸﴾ لِيُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِيْ يَخْتَلِفُوْنَ فِيْهِ وَ لِيَعْلَمَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا
اَنَّهُمْ كَانُوْا كٰذِبِيْنَ ﴿۳۹﴾ اِنَّمَا قَوْلُنَا لِشَيْءٍ اِذَآ اَرَدْنٰهُ اَنْ نَّقُوْلَ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿۴۰﴾ ع

आयत न० 35 से 40

और मुशरिक लोग ऐसा कहते हैं कि अगर अल्लाह तआ़ला (यह) **चाहते** (कि हम उसके सिवा किसी की इबादत न करें) **तो अल्लाह के सिवा किसी चीज़ की न हम इबादत करते और न हमारे बाप दादा और न उस के बिना** (हुक्म के) **किसी चीज़ को हराम कह सकते** (इससे पता चला कि अल्लाह तआ़ला को हमारा तरीक़ा पसन्द है वर्ना हम को क्यों करने देते, ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आप उन से दुखी न हों क्योंकि यह बेतुकी बहस कोई नई बात नहीं बल्कि) **जो** (काफ़िर) **इन से पहले हुए हैं ऐसी ही हरकत उन्होंने भी की थी** (यानी बेतुकी बहसें अपने पैग़म्बरों से की थीं) **सो पैग़म्बरों** (का इससे क्या बिगड़ा क्योंकि उन) **के ज़िम्मे तो** (हुक्मों का) **साफ़-साफ़ पहुंचा देना** (है इसी तरह आप के ज़िम्मे भी ये ही काम था जो आप कर रहे हैं फिर अगर

ज़िद की वजह से ये न माने तो आप का क्या नुक़सान) **है(35) और हम हर उम्मत में** (पिछली उम्मतों से) **कोई न कोई पैग़म्बर** (यह बात सिखाने के लिए) **भेजते रहे हैं कि तुम** (ख़ास) **अल्लाह की इबादत करो और शैतान** (के रास्ते) **से** (कि वो शिर्क व कुफ़्र है) **बचते रहो सो उन में कुछ वो हुए जिन को अल्लाह ने हिदायत दी** (कि उन्होंने सच्चे दीन को मान लिया) **और कुछ उनमें वो हुए जिन पर गुमराही साबित हुई, तो** (अच्छा) **ज़मीन में चलो फिरो फिर** (निशानियों से) **देखो कि** (पैग़म्बरों के) **झुटलाने वालों का कैसा** (बुरा) **अन्जाम हुआ** (बस अगर वो गुमराह न थे तो उन पर अज़ाब क्यों आया)**(36) उन के सीधे रास्ते पर आने की अगर** (ऐ पैग़म्बर) **आप को तमन्ना हो तो** (कुछ नतीजा नहीं क्योंकि) **अल्लाह तआ़ला ऐसे आदमी को हिदायत नहीं किया करता जिस को** (उस आदमी की हटधर्मी की वजह से) **गुमराह करता है** (हां अगर वो हटधर्मी छोड़ दे तो हिदायत कर देता है) **और** (अगर वो यह समझते हों कि हमारे झूटे ख़ुदा इस हालत में भी अज़ाब से बचा लेंगे तो वो समझ रक्खें कि अल्लाह तआ़ला के मुक़ाबिले में) **उन का कोई मदद करने वाला ही न होगा(37) और ये लोग बड़े ज़ोर लगा-लगा कर अल्लाह की क़समें खाते हैं कि जो मर जाता है अल्लाह तआ़ला उस को दोबारा ज़िन्दा न करेगा** (और क़ियामत न आएगी, आगे जवाब है) **क्यों नहीं ज़िन्दा करेगा** (यानी ज़रूर ज़िन्दा करेगा) **इस वादे को अललाह तआ़ला ने अपने ज़िम्मे ले रक्खा है लेकिन बहुत से लोग** (इस पर) **यक़ीन नहीं लाते(38)** (और यह दोबारा ज़िन्दा करना इसलिए होगा) **ताकि** (दीन के बारे में) **जिस चीज़ में ये लोग** (दुनिया में) **झगड़ते थे** (और पैग़म्बरों के फ़ैसले से रास्ते पर न आते थे) **उन के सामने उस** (की असलीयत) **को खोल दे और ताकि** (उस वक़्त) **काफ़िर लोग** (पूरा) **यक़ीन करलें कि सचमुच वो ही झूटे** (थे और पैग़म्बर व मुसलमान सच्चे) **थे** (बस क़ियामत का आना सच्ची बात है और अज़ाब से फ़ैसला होना ज़रूरी है)**(39) हम जिस चीज़ को** (पैदा करना) **चाहते हैं** (हमें उस में कुछ मेहनत करना नहीं पड़ती बल्कि हमारी क़ुदरत ऐसी बड़ी है कि) **बस उस से हमारा इतना ही कहना** (काफ़ी) **होता है कि तू** (पैदा) **होजा बस वो** (मौजूद) **हो जाती** (है तो इतनी बड़ी क़ुदरत के सामने बेजान चीज़ों में जान का पड़ जाना कौन सा मुश्किल) **है** (जैसे पहली बार उनमें जान डाल चुके हैं)**(40)**

नोटः- आयत "लक़द बअसना फ़ी कुल्लि उम्मतिर्रसूलन" से मालूम होता है कि हिन्दुस्तान व पाकिस्तान के इलाक़ों में भी अल्लाह के पैग़म्बर ज़रूर आए होंगे चाहे वो यहीं के रहने वाले हों या किसी दूसरे मुल्क में हों और उनके नाइब व मुबल्लिग़ (प्रचारक) यहां पहुंचे हों।

وَالَّذِينَ هَاجَرُوا فِي اللَّهِ مِنْ بَعْدِ مَا ظُلِمُوا لَنُبَوِّئَنَّهُمْ فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً ۖ وَلَأَجْرُ الْآخِرَةِ أَكْبَرُ ۚ لَوْ كَانُوا
يَعْلَمُونَ ﴿٤١﴾ الَّذِينَ صَبَرُوا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ﴿٤٢﴾ وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ إِلَّا رِجَالًا نُوحِي إِلَيْهِمْ فَاسْأَلُوا
أَهْلَ الذِّكْرِ إِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿٤٣﴾ بِالْبَيِّنَاتِ وَالزُّبُرِ ۗ وَأَنْزَلْنَا إِلَيْكَ الذِّكْرَ لِتُبَيِّنَ لِلنَّاسِ مَا نُزِّلَ إِلَيْهِمْ
وَلَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُونَ ﴿٤٤﴾ أَفَأَمِنَ الَّذِينَ مَكَرُوا السَّيِّئَاتِ أَنْ يَخْسِفَ اللَّهُ بِهِمُ الْأَرْضَ أَوْ يَأْتِيَهُمُ الْعَذَابُ
مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٤٥﴾ أَوْ يَأْخُذَهُمْ فِي تَقَلُّبِهِمْ فَمَا هُمْ بِمُعْجِزِينَ ﴿٤٦﴾ أَوْ يَأْخُذَهُمْ عَلَىٰ تَخَوُّفٍ فَإِنَّ
رَبَّكُمْ لَرَءُوفٌ رَحِيمٌ ﴿٤٧﴾

आयत न० 41 से 47

और जिन लोगों ने अल्लाह के वास्ते अपना वतन (मक्का) **छोड़ दिया** (और हबशा चले गये) **बाद इसके कि उन पर** (काफ़िरों की तरफ़ से) **ज़ुल्म किया गया** (क्योंकि ऐसी मजबूरी में वतन छोड़ना बड़ा भारी होता है) **हम उन को दुनिया में ज़रूर अच्छा ठिकाना** (देंगे यानी उन को मदीना पहुंचा कर ख़ूब अमन चैन) **देंगे, और आख़रत का सवाब** (इससे) **बढ़ कर है** (कि अच्छा भी है और सदा का भी), **काश** (इस आख़रत के सवाब की) **इन** (बेख़बर काफ़िरों) **को** (भी) **ख़बर होती** (इस को पाने की चाहत से मुसलमान हो जाते)**(41) वो** (हिजरत करने वाले इन वादों के इस लिए हक़दार हैं कि वो) **ऐसे हैं जो** (नागवार बातों पर) **सब्र करते हैं** (कि दीन के लिए अपना प्यारा घर छोड़ा और सब्र किया) **और** (वो हर हाल में) **अपने रब पर भरोसा रखते हैं** (वतन छोड़ने के वक़्त यह नहीं सोचते कि खाएं पियेंगे कहां से)**(42) और** (ये इनकार करने वाले लोग जो आप की पैग़म्बरी का इसलिए इनकार कर रहे हैं कि आप इन्सान हैं और पैग़म्बर उन के नज़दीक कोई इन्सान न होना चाहिए यह उन की जहालत की बात है, क्योंकि) **हम ने आप से पहले भी सिर्फ़ आदमी ही पैग़म्बर बनाकर भेजे जिन पर वही भेजा करते थे** (तो ऐ मक्के के इनकार करने वालो) **अगर तुम को पता नहीं तो** (जिन लोगों को पहले पैग़म्बरों की बातों का पता हो और तुम्हें भी उन पर भरोसा है ऐसे) **दूसरे इल्म वालों से पूछ लो(43)** (और उन पैग़म्बरों को) **मोजिज़े और किताबें देकर भेजा,** (इसी तरह ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **आप पर भी यह कुरआन उतारा ताकि जो हिदायतें** (आपके वास्ते से) **लोगों के पास भेजी गई हैं वो हिदायतें** (और नसीहतें) **आप इन लोगों को खोल कर समझा दें और ताकि वो उनमें सोचें समझें(44) जो लोग** (सच्चे दीन के झुटलाने को) **बुरी-बुरी चालें चलते हैं** (कि कहीं इसमें शक व ऐतराज़ की बातें निकालते हैं कहीं

दूसरे को रोकते हैं) **क्या ऐसे लोग** (ये कुफ़्र की चालें चल कर) **फिर भी इस बात से बेफ़िक्र** (बैठे हुए) **हैं कि अल्लाह तआला उन को** (उन के कुफ़्र के वबाल में) **ज़मीन में धंसा दे या उन पर ऐसी जगह से अज़ाब आजाए जहां उन का ध्यान भी न हो** (जैसे जंगे बद्र में उन को ऐसे बेसरो सामान मुसलमानों के हाथों सज़ा मिली कि जिसका कभी गुमान भी न कर सकते थे)**(45) या उन को चलते फिरते** (किसी मुसीबत में) **पकड़ ले** (जैसे कोई बीमारी ही अचानक आजाए) **सो** (अगर इन बातों में से कोई बात हो जाए तो) **ये लोग अल्लाह को हरा** (भी) **नहीं सकते(46) या उन को इस तरह पकड़ ले कि** (धीरे-धीरे) **घटते चले जाएं** (जैसे बीमारी की वबा फैल जाए जिस से धीरे-धीरे ख़ात्मा हो जाए, यानी निडर न होना चाहिए अल्लाह को सब कुदरत है मगर ढील जो दे रक्खी है)**, सो** (इसकी वजह ये है कि) **तुम्हारा रब बड़ा हमदर्द बड़ा महरबान है** (इसलिए ढील दी है कि अब भी समझ जाओ और कामयाबी और बख़्शिश का रास्ता अपनाओ)(47)।

नोटः- हिजरत करने वालों को दुनिया व आख़रत के जिस इनआम का वादा किया गया है अगर किसी को दुनिया में वो बदला नज़र न आए तो उसे अपनी नीयत व अमल की तरफ़ ध्यान करना चाहिए कि कहीं नीयत में कोई खोट तो नहीं या सब्र व तवक्कुल में कमी तो नहीं।

اَوَ لَمْ يَرَوْا اِلٰى مَا خَلَقَ اللّٰهُ مِنْ شَیْءٍ يَّتَفَيَّؤُا ظِلٰلُهٗ عَنِ الْيَمِيْنِ وَ الشَّمَآئِلِ سُجَّدًا لِّلّٰهِ وَ هُمْ دٰخِرُوْنَ ۝٤٨ وَ
لِلّٰهِ يَسْجُدُ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِی الْاَرْضِ مِنْ دَآبَّةٍ وَّ الْمَلٰٓئِكَةُ وَ هُمْ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ ۝٤٩ يَخَافُوْنَ رَبَّهُمْ مِّنْ
فَوْقِهِمْ وَ يَفْعَلُوْنَ مَا يُؤْمَرُوْنَ ۝٥٠ وَ قَالَ اللّٰهُ لَا تَتَّخِذُوْٓا اِلٰهَيْنِ اثْنَيْنِ ۚ اِنَّمَا هُوَ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَاِيَّایَ
فَارْهَبُوْنِ ۝٥١ وَ لَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ لَهُ الدِّيْنُ وَاصِبًا ؕ اَفَغَيْرَ اللّٰهِ تَتَّقُوْنَ ۝٥٢ وَ مَا بِكُمْ مِّنْ نِّعْمَةٍ فَمِنَ
اللّٰهِ ثُمَّ اِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فَاِلَيْهِ تَجْـَٔرُوْنَ ۝٥٣ ثُمَّ اِذَا كَشَفَ الضُّرَّ عَنْكُمْ اِذَا فَرِيْقٌ مِّنْكُمْ بِرَبِّهِمْ يُشْرِكُوْنَ ۝٥٤
لِيَكْفُرُوْا بِمَآ اٰتَيْنٰهُمْ ؕ فَتَمَتَّعُوْا ۫ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۝٥٥ وَ يَجْعَلُوْنَ لِمَا لَا يَعْلَمُوْنَ نَصِيْبًا مِّمَّا رَزَقْنٰهُمْ ؕ تَاللّٰهِ
لَتُسْـَٔلُنَّ عَمَّا كُنْتُمْ تَفْتَرُوْنَ ۝٥٦ وَ يَجْعَلُوْنَ لِلّٰهِ الْبَنٰتِ سُبْحٰنَهٗ ۙ وَ لَهُمْ مَّا يَشْتَهُوْنَ ۝٥٧

आयत न० 48 से 57

क्या (इन) **लोगों ने अल्लाह की उन पैदा की हुई चीज़ों को नहीं देखा** (और देख कर तौहीद की दलील नहीं बनाया) **जिन के साये कभी एक तरफ़ को कभी दूसरी तरफ़ को इस तरह**

झुक जाते हैं कि (बिल्कुल) अल्लाह के (हुक्म के) ताबे हैं (साये सूरज के हिसाब से हैं और सूरज अल्लाह के हुक्म के ताबे है) और वो (सायादार) चीज़ें भी (अल्लाह के सामने) लाचार (और हुक्म के ताबे) हैं(48) (इसी तरह) अल्लाह ही की ताबेदार हैं जितनी चीज़ें (इरादे से) चलने वाली आसमानों में (जैसे फ़रिशते) और ज़मीन में (जैसे जानदार) मौजूद हैं और (ख़ास कर) फ़रिशते (भी) और वो (फ़रिशते इतने बड़े रूतबों के बावजूद अल्लाह की ताबेदारी से) घमन्ड नहीं करते(49) वो अपने रब से डरते हैं जो कि उनके ऊपर है और उन को जो कुछ (अल्लाह की तरफ़ से) हुक्म किया जाता है वो उसको करते हैं(50) और अल्लाह तआ़ला ने (सब लोगों को पैग़म्बरों के वास्ते से) कहा है कि दो (या ज़्यादा) माबूद मत बनाओ बस एक माबूद ही है (इसलिए बस) तुम लोग ख़ास मुझ ही से डरा (करो और शिर्क न) करो(51) और उसी की हैं सब चीज़ें जो कुछ कि आसमानों में और ज़मीन में हैं और उसी की ताबेदारी ज़रूरी है (यानी वो ही हक़दार है इसका कि उस की ताबेदारी की जाए), तो क्या फिर भी अल्लाह के सिवा औरों से डरते (हो और उन से डर कर उन को पूजते) हो(52) और तुम्हारे पास जो कुछ (किसी क़िस्म की) भी नेमत है वो सब अल्लाह ही की तरफ़ से है फिर जब तुम को (ज़रा) तकलीफ़ पहुंचती है तो (उसके दूर करने के लिए) उसी (अल्लाह) से फ़रियाद करते हो (और कोई बुत उस वक़्त याद नहीं आता)(53) फिर जब (अल्लाह तआ़ला) तुम से उस तकलीफ़ को हटा देता है तो तुम में का एक गिरोह (और वो ही बड़ा गिरोह है) अपने रब के साथ (पहले की तरह) शिर्क करने लगता है(54) जिस का मतलब ये है कि हमारी दी हुई नेमत की (कि वो तकलीफ़ का दूर करना है) नाशुक्री करने लगता है, अच्छा कुछ दिनों ऐश करलो, (देखो) अब जल्दी (मरते ही) तुम को पता चल जाएगा(55) और ये लोग हमारी दी हुई चीज़ों में से उन (माबूदों) का हिस्सा लगाते हैं जिन के (माबूद होने के) बारे में उन को कुछ पता (और उन के माबूद होने की कोई दलील व सनद) नहीं, अल्लाह की क़सम तुम से तुम्हारे झूटे इल्ज़ामों की (क़ियामत में) ज़रूर पूछताछ होगी(56) (और एक शिर्क उन का यह है कि) अल्लाह तआ़ला के लिए बेटियां घड़ रक्खी हैं, सुबहानल्लाह (कैसी बेतुकी बात है) और अपने लिए चाहती चीज़ (यानी बेटे पसन्द करते हैं)(57)।

وَ اِذَا بُشِّرَ اَحَدُهُمْ بِالْاُنْثٰى ظَلَّ وَجْهُهٗ مُسْوَدًّا وَّ هُوَ كَظِيْمٌ ۚ﴿۵۸﴾ يَتَوَارٰى مِنَ الْقَوْمِ مِنْ سُوْٓءِ مَا بُشِّرَ بِهٖ ؕ
اَيُمْسِكُهٗ عَلٰى هُوْنٍ اَمْ يَدُسُّهٗ فِى التُّرَابِ ؕ اَلَا سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ﴿۵۹﴾ لِلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ مَثَلُ السَّوْءِ ۚ
وَ لِلّٰهِ الْمَثَلُ الْاَعْلٰى ؕ وَ هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿۶۰﴾ ع

आयत न० 58 से 60

और जब उनमें से किसी को बेटी (पैदा होने) **की ख़बर दीजाए** (जिसको अल्लाह के लिए ठहराते हैं) **तो** (इतना नाराज़ हो कि) **सारे दिन उस का चेहरा उदास रहे और वो दिल ही दिल में घुटता रहे**(58) (और) **जिस चीज की उस को ख़बर दी गई है** (यानी बेटी का पैदा होना) **उसकी शर्म से लोगों से छुपा छुपा फिरे,** (और सोचता है कि) **या तो इस** (बच्चे) **को रूसवाई के साथ अपने पास रहने दे या उस को** (ज़िन्दा या मार कर) **मिट्टी में दबा दे, अच्छी तरह सुन लो उन्होंने जो बात तय कर रक्खी है बहुत बुरी** (है एक तो अल्लाह के लिए औलाद साबित करना ये ही कितनी बुरी बात है फिर औलाद भी वो जिस को ख़ुद इतनी गिरी हुई और शर्म की चीज़ समझता) **है**(59) **जो लोग आख़रत पर यक़ीन नहीं रखते उन की बुरी हालत है** (दुनिया में भी कि कैसी जहालत में पड़े हैं और आख़रत में भी कि अज़ाब में पकड़े जाएंगे)**, और अल्लाह तआ़ला के लिए तो बड़े ऊंचे दर्जे की ख़ूबियां साबित** (हैं न कि वो जो मुशरिक लोग बकते) **हैं, और वो बड़े ज़बरदस्त** (ताक़त वाले) **हैं** (अगर उन को दुनिया में शिर्क की सज़ा देना चाहें तो कुछ मुश्किल नहीं, लेकिन साथ ही) **बड़ी हिकमत वाले** (भी) **हैं** कि (मौत तक सज़ा को रोक रक्खा है)(60)।

नोटः- इन आयतों से मालूम हुआ कि घर में लड़की पैदा होने को मुसीबत व रूसवाई समझना जाइज़ नहीं ये काफ़िर का काम है। एक हदीस में है कि ''वो औरत मुबारक होती है जिसके पहला बच्चा लड़की पैदा होती है''। और एक हदीस में है कि ''जो लड़कियों के साथ अच्छा सलूक करे तो ये लड़कियां उसके और जहन्नम के बीच दीवार हो जाएंगी''। (रूहुल कुरआन)

وَ لَوْ يُؤَاخِذُ اللّٰهُ النَّاسَ بِظُلْمِهِمْ مَّا تَرَكَ عَلَيْهَا مِنْ دَآبَّةٍ وَّ لٰكِنْ يُّؤَخِّرُهُمْ اِلٰۤى اَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ فَاِذَا جَآءَ
اَجَلُهُمْ لَا يَسْتَاْخِرُوْنَ سَاعَةً وَّ لَا يَسْتَقْدِمُوْنَ ﴿۶۱﴾ وَ يَجْعَلُوْنَ لِلّٰهِ مَا يَكْرَهُوْنَ وَ تَصِفُ اَلْسِنَتُهُمُ الْكَذِبَ اَنَّ
لَهُمُ الْحُسْنٰى ؕ لَا جَرَمَ اَنَّ لَهُمُ النَّارَ وَ اَنَّهُمْ مُّفْرَطُوْنَ ﴿۶۲﴾ تَاللّٰهِ لَقَدْ اَرْسَلْنَاۤ اِلٰۤى اُمَمٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَزَيَّنَ
لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ فَهُوَ وَلِيُّهُمُ الْيَوْمَ وَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۶۳﴾ وَ مَاۤ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ اِلَّا لِتُبَيِّنَ
لَهُمُ الَّذِى اخْتَلَفُوْا فِيْهِ ۙ وَ هُدًى وَّ رَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿۶۴﴾ وَ اللّٰهُ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ
بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّسْمَعُوْنَ ﴿۶۵﴾ وَ اِنَّ لَكُمْ فِى الْاَنْعَامِ لَعِبْرَةً ؕ نُسْقِيْكُمْ مِّمَّا فِىْ بُطُوْنِهٖ
مِنْۢ بَيْنِ فَرْثٍ وَّ دَمٍ لَّبَنًا خَالِصًا سَآئِغًا لِّلشّٰرِبِيْنَ ﴿۶۶﴾

आयत न० 61 से 66

और अगर अल्लाह तआला (ज़ालिम) **लोगों पर उन के ज़ुल्म** (यानी शिर्क व कुफ़्र) **की वजह से** (फ़ौरन दुनिया में पूरी) **पकड़ करते तो** (इस) **ज़मीन पर कोई चलने** (फिरने) **वाला** (ज़िन्दा) **न छोड़ते लेकिन ख़ास वक़्त तक ढील देते हैं** (ताकि अगर कोई तौबा करना चाहे तो गुन्जाइश हो), **फिर जब उन का** (वो) **तय वक़्त** (नज़दीक) **आपहुचेंगा उस वक़्त एक घड़ी न** (उससे) **पीछे हट सकेंगे और न आगे बढ़ सकेंगे** (बल्कि फ़ौरन सज़ा हो जाएगी)(61) **और अल्लाह तआला के लिए वो चीज़ें घड़ते हैं जिन को ख़ुद** (अपने लिए) **नापसन्द करते हैं** (जैसा ऊपर आया है) **और** (फिर) **इस पर अपनी ज़बान से झूटे दावे करते जाते हैं कि उनके** (यानी हमारे) **लिए** (क़ियामत में) **हर तरह की भलाई है,** (अल्लाह तआला कहते हैं कि भलाई कहां से आई थी बल्कि) **ज़रूरी बात है कि उनके लिए** (क़ियामत के दिन) **दोज़ख़ है और बेशक वो लोग** (दोज़ख़ में) **सबसे पहले भेजे जाएंगे**(62) (ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आप उनके कुफ़्र और जहालत पर कुछ ग़म न कीजिए, क्योंकि) **अल्लाह की क़सम आप**(के ज़माने) **से पहले जो उम्मतें हुई हैं उन के पास भी हम ने पैग़म्बरों को भेजा था** (जैसा कि आप को इन के पास भेजा है) **तो** (जिस तरह ये लोग अपनी कुफ़्र की बातों को पसन्द करते हैं और उस पर जमे हैं इसी तरह) **उन को भी शैतान ने उन के** (कुफ़्र के) **काम अच्छे करके दिखाए बस वो** (शैतान) **आज** (यानी दुनिया में) **उन का दोस्त है** (यानी दोस्त था कि उन को बहकाता सिखाता था) **और** (उस की वजह से क़ियामत में) **उन के वास्ते दर्दनाक सज़ा** (तैयार) **है**(63) **और हमने आप पर यह किताब** (जिस का नाम क़ुरआन है इसलिए नहीं उतारी कि सब का रास्ते पर लाना आप के ज़िम्मे होता कि कुछ के रास्ते पर न आने से आप दुखी हों बल्कि) **सिर्फ़ इस वास्ते उतारी है कि** (दीन की) **जिन बातों में लोग अलग-अलग रास्ते अपनाए हुए है आप** (आम) **लोगों पर उन को खोल कर बयान कर दें** (यह फ़ाइदा तो क़ुरआन का आ़म है) **और ईमान वालों की** (ख़ास) **हिदायत और रहमत के लिए** (उतारा है जो अल्लाह की महरबानी से हासिल) **है**(64) **और अल्लाह तआला ने आसमान से पानी बरसाया फिर उससे ज़मीन को उसके मुर्दा होने के बाद ज़िन्दा किया** (यानी उसकी पैदावार की ताक़त लौटा दी), **बेशक इस बात में ऐसे लोगों के लिए** (अल्लाह के एक होने और दाता होने की) **बड़ी दलील है जो** (मन से इन बातों को) **सुनते हैं**(65) **और बेशक तुम्हारे लिए जानवरों में भी सोचने** (समझने) **का** (बड़ा) **सामान है,** (देखो) **उन के पेट में जो गोबर और ख़ून है उस के बीच में से साफ़ और पाकीज़ा दूध** (बनाकर) **हम तुम को पीने को देते हैं**(66)।

नोटः- हदीस में है जब तुम कोई खाना खाओ तो यह कहोः

"अल्लाहुम्मा बारिक लना फ़ीहि व अतइम्ना ख़ैरम मिन्हु"

اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِيْهِ وَاَطْعِمْنَا خَيْرًا مِّنْهُ

यानी या अल्लाह इसमें हमारे लिए बरकत दीजिए और आगे को इससे अच्छा खाना नसीब कीजिए। और जब दूध पियो तो यह कहो

"अल्लाहुम्मा बारिक लना फ़ीहि वज़िदना मिन्हु"

اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِيْهِ وَزِدْنَا مِنْهُ

यानी या अल्लाह हमारे लिए इसमें बरकत दीजिए और आगे को ज़्यादा कीजिए।

इससे अच्छे का सवाल इसलिए नहीं किया गया कि इन्सानी ख़ुराकों में दूध से अच्छी कोई दूसरी ख़ुराक नहीं है। इसलिए क़ुदरत ने हर जानवर व इन्सान की पहली ख़ुराक दूध ही बनाई है जो मां की छातियों से उसे मिलती है।

وَ مِنْ ثَمَرٰتِ النَّخِيْلِ وَ الْاَعْنَابِ تَتَّخِذُوْنَ مِنْهُ سَكَرًا وَّ رِزْقًا حَسَنًا ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿٦٧﴾

आयत न० 67

और (इसी तरह) **खजूर और अंगूर** (के बारे में सोचना चाहिए कि उन) **के फलों से तुम लोग नशे की चीज़ और खाने की पाक चीज़ें** (जैसे छुआरा व किशमिश और शर्बत और सिरका) **बनाते हो, बेशक इसमें** (भी अल्लाह की तौहीद की और उसके दाता होने की) **उन लोगों के लिए बड़ी दलील है जो समझ से काम लेते हैं**(67)।

नोटः- नशे की चीज़ों के मुक़ाबिले खाने की चीज़ों को पाक बताना इस बात की दलील है कि नशे की चीज़ें जाइज़ नहीं जो कि इसके बाद नाज़िल होने वाली आयत में बिल्कुल नाजाइज़ बता दी गईं।

وَ اَوْحٰى رَبُّكَ اِلَى النَّحْلِ اَنِ اتَّخِذِيْ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوْتًا وَّ مِنَ الشَّجَرِ وَ مِمَّا يَعْرِشُوْنَ ﴿٦٨﴾ ثُمَّ كُلِيْ مِنْ كُلِّ
الثَّمَرٰتِ فَاسْلُكِيْ سُبُلَ رَبِّكِ ذُلُلًا ؕ يَخْرُجُ مِنْۢ بُطُوْنِهَا شَرَابٌ مُّخْتَلِفٌ اَلْوَانُهٗ فِيْهِ شِفَآءٌ لِّلنَّاسِ ؕ اِنَّ
فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿٦٩﴾ وَاللّٰهُ خَلَقَكُمْ ثُمَّ يَتَوَفّٰىكُمْ ۙ۫ وَ مِنْكُمْ مَّنْ يُّرَدُّ اِلٰۤى اَرْذَلِ الْعُمُرِ لِكَيْ لَا

يَعْلَمَ بَعْدَ عِلْمٍ شَيْـًٔا ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ قَدِيْرٌ ۞ وَاللّٰهُ فَضَّلَ بَعْضَكُمْ عَلٰى بَعْضٍ فِى الرِّزْقِ ۚ فَمَا الَّذِيْنَ فُضِّلُوْا
بِرَاۗدِّيْ رِزْقِهِمْ عَلٰي مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ فَهُمْ فِيْهِ سَوَاۗءٌ ۭ اَفَبِنِعْمَةِ اللّٰهِ يَجْحَدُوْنَ ۞

आयत न० 68 से 71

और (यह बात भी सोचने की है कि) **आप के रब ने शहद की मक्खी के दिल में यह बात डाली कि तू पहाड़ों में घर** (यानी छत्ता) **बनाले और पेड़ों में** (भी) **और लोग जो मकान बनाते हैं उन में** (भी छत्ता लगाले, जैसा कि इन सब जगहों पर छत्ता लगाती है)(68) **फिर हर क़िस्म के** (बहुत से) **फलों** (फूलों) **से** (जो तुझ को पसन्द हों रस) **चूसा करे फिर** (रस चूस कर छत्ते की तरफ़ वापस आने के लिए) **अपने रब के रास्तों में चल जो** (तेरे चलने और याद रहने के लिए) **आसान** (हैं जैसा कि बड़ी-बड़ी दूर से बेरास्ता भूले हुए अपने छत्ते को लौट आती) **है,** (और) **उस के पेट में से पीने की एक चीज़ निकलती है** (यानी शहद) **जिस के रंग अलग-अलग होते हैं कि उसमें लोगों** (की बहुत सी बीमारियों) **के लिए शिफ़ा** (है हालांकि ख़ुद वो जानवर ज़हरीला) **है, बेशक इसमें** (भी) **उन लोगों के लिए** (अल्लाह की तौहीद की और दाता होने की) **बड़ी दलील है जो सोचते हैं**(69) **और** (अपने बारे में भी सोचिये कि) **अल्लाह तआ़ला ने तुम को** (पहले) **पैदा किया फिर** (उम्र ख़त्म होने पर) **तुम्हारी जान निकालता है** (जिनमें कुछ तो होशो हवास में चलते हाथ पांव उठ जाते हैं) **और कुछ तुम में वो हैं जो बेकार उम्र तक पहुंचाए जाते हैं** (जिनमें न जिस्म में ताक़त रहे न समझ रहे) **जिस का यह असर होता है कि एक चीज़ को जानते हुए फिर अन्जान हो जाता है** (जैसा कि बहुत से ऐसे बूढ़ों को देखा जाता है कि अभी उन को एक बात बताई और अभी भूल गये और फिर उस को पूछ रहे हैं)**, बेशक अल्लाह तआ़ला बड़े इल्म वाले बड़ी क़ुदरत वाले** (हैं इल्म से हर एक भलाई जानते हैं और क़ुदरत से वैसा ही कर देते है इसलिए ज़िन्दगी और मौत की हालतें अलग-अलग कर दीं बस ये भी तौहीद की दलीलें) **हैं**(70) **और** (तौहीद के हक़ होने और शिर्क के ग़लत होने के सबूत में एक मिसाल अपने मुआमलों में सुनो कि) **अल्लाह तआ़ला ने तुम में कुछ को कुछ पर रोज़ी** (के बारे में) **बड़ाई दी है** (जैसे किसी को ऐसा मालदार बनाया कि उस के वास्ते से दूसरों को भी रोज़ी पहुंचती है और किसी को ग़रीब और किसी को न मालदार बनाया न ग़रीब)**, सो जिन लोगों को** (रोज़ी में ख़ास) **बड़ाई दी गई है** (कि उनके पास माल भी है और नौकर चाकर भी हैं) **वो** (लोग) **अपने हिस्से का माल अपने ग़ुलामों**

(और नौकरों) **को इस तरह कभी देने वाले नहीं कि वो** (मालिक और नौकर) **सब उसमें बराबर हो जाएं** (तो जैसे मालिक और नौकर बराबर नहीं हो सकते, इसी तरह ये बुत कि जिन का मालिक भी अल्लाह को मानते हो अल्लाह के बराबर कैसे हो जाएंगे), **क्या** (ये बातें सुन कर) **फिर भी** (शिर्क करके) **अल्लाह की नेमत का** (यानी इस बात का कि अल्लाह ने नेमत दी है) **इनकार करते हैं**(71)

नोटः- यहां मालूम हुआ कि किसी को अमीर किसी को ग़रीब बनाना अल्लाह का काम है इस फ़र्क़ को किसी क़ानून से मिटाने की कोशिश इन्साफ़ नहीं लेकिन किसी ग़रीब को गिरा हुआ समझना हराम है।

وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا وَّجَعَلَ لَكُمْ مِّنْ اَزْوَاجِكُمْ بَنِيْنَ وَحَفَدَةً وَّرَزَقَكُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ ؕ
اَفَبِالْبَاطِلِ يُؤْمِنُوْنَ وَبِنِعْمَتِ اللّٰهِ هُمْ يَكْفُرُوْنَ ﴿۷۲﴾ وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَمْلِكُ لَهُمْ رِزْقًا مِّنَ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ شَيْـًٔا وَّلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ﴿۷۳﴾ فَلَا تَضْرِبُوْا لِلّٰهِ الْاَمْثَالَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۷۴﴾
ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا عَبْدًا مَّمْلُوْكًا لَّا يَقْدِرُ عَلٰى شَيْءٍ وَّمَنْ رَّزَقْنٰهُ مِنَّا رِزْقًا حَسَنًا فَهُوَ يُنْفِقُ مِنْهُ سِرًّا وَّ
جَهْرًا ؕ هَلْ يَسْتَوٗنَ ؕ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ؕ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۷۵﴾ وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا رَّجُلَيْنِ اَحَدُهُمَاۤ اَبْكَمُ لَا
يَقْدِرُ عَلٰى شَيْءٍ وَّهُوَ كَلٌّ عَلٰى مَوْلٰىهُ ۙ اَيْنَمَا يُوَجِّهْهُّ لَا يَاْتِ بِخَيْرٍ ؕ هَلْ يَسْتَوِيْ هُوَ ۙ وَمَنْ يَّاْمُرُ
بِالْعَدْلِ ۙ وَهُوَ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿۷۶﴾ ع

आयत न० 72 से 76

और (एक बड़ी नेमत और अल्लाह तआ़ला की कुदरत की दलील ख़ुद तुम्हारा वजूद है कि) **अल्लाह तआ़ला ने तुम ही में से** (यानी तुम्हारी जिन्स और क़ौम में से) **तुम्हारे लिए बीवियां बनाईं और** (फिर) **उन बीवियों से तुम्हारे बेटे और पोते पैदा किये** (कि इससे नस्ल चलती है) **और तुम को अच्छी-अच्छी चीज़ें खाने** (पीने) **को दीं, क्या** (ये सब दलीलें व नेमते सुनकर) **फिर भी बेबुनियाद चीज़ पर** (यानी बुतों पर) **ईमान रक्खेंगे** (जिन के ख़ुदा होने की कोई दलील नहीं बल्कि उसके ख़िलाफ़ दलील है) **और अल्लाह तआ़ला की नेमत की नाशुक्री** (बेक़द्री) **करते रहेंगे**(72) **और** (मतलब इस नाशुक्री का यह है कि) **अल्लाह को छोड़ कर ऐसी चीज़ों की इबादत करते रहेंगे जो उन को न आसमान में से रोज़ी पहुंचा सकती हैं और न ज़मीन में से** (यानी

न बारिश बरसाना उन के बस में है न ज़मीन में से कुछ पैदा करना) **और न ऐसा करने की कुदरत रखते हैं**(73) **सो** (जब शिर्क का ग़लत होना साबित हो गया तो) **अल्लाह तआ़ला के लिए मिसालें मत घड़ो** (कि अल्लाह तआ़ला की मिसाल दुनिया के बादशाहों की सी है कि हर आदमी उन से फ़रियाद नहीं कर सकता इसके लिए नाइब वास्ता होते हैं कि लोग उनसे अपनी ज़रूरत रखते हैं फिर वो बादशाहों से कहते हैं), **अल्लाह तआ़ला** (अच्छी तरह) **जानते हैं** (कि ऐसी मिसाले बेतुकी हैं) **और तुम** (न सोचने समझने की वजह से) **नहीं जानते** (इसलिए जो चाहते हो बक देते हो)(74) **अल्लाह तआ़ला** (शिर्क का ग़लत होना साबित करने के लिए) **एक मिसाल बयान करते हैं कि** (मान लो) **एक** (तो) **गुलाम है कोई दूसरा उस का मालिक है कि किसी चीज़ का** (बिना मालिक की इजाज़त के) **हक़ नहीं रखता और** (दूसरा) **एक आदमी है जिस को हमने अपने पास से अच्छी रोज़ी दे रक्खी है तो उसमें से छुपा कर और सब के सामने** (जिस तरह चाहता है जहां चाहता है) **ख़र्च करता है** (उस को कोई रोकने टोकने वाला नहीं), **क्या इस क़िस्म के आदमी आपस में बराबर हो सकते** (हैं बस जब मालिक व गुलाम बराबर नहीं हो सकते तो अल्लाह और बन्दा कब बराबर हो सकते) **हैं, सारी तारीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं** (बस इबादत का हक़दार भी वो ही है), **लेकिन इनमें बहुत लोग** (न सोचने समझने की वजह से ऐसी साफ़ बात भी) **नहीं जानते**(75) **और अल्लाह तआ़ला** (इस को समझाने के लिए) **एक और मिसाल बयान करते हैं कि** (मान लो) **दो आदमी हैं जिन में एक तो** (गुलाम है और) **गूंगा** (बहरा भी) **है** (और इस वजह से) **कोई काम नहीं कर सकता और वो अपने मालिक पर बोझ बना हुआ** (है कि वो मालिक ही उसके सारे काम करता) **है** (और) **वो** (मालिक) **उस को जहां भेजता है कोई काम ठीक से करके नहीं लाता** (यानी ख़ुद तो क्या करता दूसरों के समझाने से भी उससे कोई काम ठीक नहीं होता, तो) **क्या यह आदमी और ऐसा आदमी आपस में बराबर हो सकते हैं जो अच्छी बातें सिखाता हो** (जिससे उसके समझदार होने का पता चलता है) **और ख़ुद भी** (हर बात में) **सीधे रास्ते पर** (चलता) **हो** (जब लोगों में एक जिन्स होने के बावजूद आपस में बराबरी नहीं तो कहां पैदा करने वाला और कहां पैदा होने वाला)(76)।

नोटः- बीवियों से औलाद पैदा करने में बताया गया कि औलाद की पैदाइश में बाप के मुक़ाबिले मां का ज़्यादा हाथ है इसलिए हदीस में मां के हक़ को बाप के हक़ से ज़्यादा बताया गया है।

وَ لِلّٰهِ غَيْبُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ وَ مَاۤ اَمْرُ السَّاعَةِ اِلَّا كَلَمْحِ الْبَصَرِ اَوْ هُوَ اَقْرَبُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ
قَدِیْرٌ ﴿۷۷﴾ وَ اللّٰهُ اَخْرَجَكُمْ مِّنْۢ بُطُوْنِ اُمَّهٰتِكُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ شَیْـًٔا ۙ وَّ جَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَ الْاَبْصَارَ وَ الْاَفْـِٕدَةَ ۙ
لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۷۸﴾ اَلَمْ یَرَوْا اِلَى الطَّیْرِ مُسَخَّرٰتٍ فِیْ جَوِّ السَّمَآءِ ؕ مَا یُمْسِكُهُنَّ اِلَّا اللّٰهُ ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیٰتٍ
لِّقَوْمٍ یُّؤْمِنُوْنَ ﴿۷۹﴾ وَ اللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْۢ بُیُوْتِكُمْ سَكَنًا وَّ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْ جُلُوْدِ الْاَنْعَامِ بُیُوْتًا
تَسْتَخِفُّوْنَهَا یَوْمَ ظَعْنِكُمْ وَ یَوْمَ اِقَامَتِكُمْ ۙ وَ مِنْ اَصْوَافِهَا وَ اَوْبَارِهَا وَ اَشْعَارِهَاۤ اَثَاثًا وَّ مَتَاعًا اِلٰى
حِیْنٍ ﴿۸۰﴾ وَ اللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّمَّا خَلَقَ ظِلٰلًا وَّ جَعَلَ لَكُمْ مِّنَ الْجِبَالِ اَكْنَانًا وَّ جَعَلَ لَكُمْ سَرَابِیْلَ تَقِیْكُمُ
الْحَرَّ وَ سَرَابِیْلَ تَقِیْكُمْ بَاْسَكُمْ ؕ كَذٰلِكَ یُتِمُّ نِعْمَتَهٗ عَلَیْكُمْ لَعَلَّكُمْ تُسْلِمُوْنَ ﴿۸۱﴾ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا عَلَیْكَ
الْبَلٰغُ الْمُبِیْنُ ﴿۸۲﴾ یَعْرِفُوْنَ نِعْمَتَ اللّٰهِ ثُمَّ یُنْكِرُوْنَهَا وَ اَكْثَرُهُمُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿۸۳﴾ ع

आयत न० 77 से 83

और आसमान और ज़मीन की सारी छुपी बातें (जो किसी को पता नहीं) **अल्लाह के कब्ज़े में हैं, और** (यह तो उन के इल्म का कमाल है और क़ुदरत का कमाल यह है कि) **क़ियामत** (उस) **का मुआ़मला बस ऐसा** (झटपट) **होगा जैसे आंख झपकना बल्कि उससे भी जल्दी,** (और इस पर अचम्भा न किया जाए क्योंकि) **बेशक अल्लाह तआ़ला हर चीज़ पर पूरी क़ुदरत रखते हैं(77) और अल्लाह तआ़ला ने तुम को तुम्हारी मां के पेट से इस हालत में निकाला कि तुम कुछ भी न जानते थे और उसने तुम को कान दिये और आंख और दिल ताकि तुम शुक्र अदा करो(78) क्या लोगों ने परिन्दों को नहीं देखा कि आसमान की हवा में** (अल्लाह के) **हुक्म के पाबन्द हैं,** (यानी) **उन को** (उस जगह) **कोई नहीं थामता सिवाए अल्लाह के** (वर्ना नीचे गिर जाते)**, बेशक इस** (बात) **में ईमान वालों के लिए** (अल्लाह की क़ुदरत की) **निशानियां** (मौजूद हैं क्योंकि परिन्दों के उड़ने के सामान पैदा करने वाले भी अल्लाह तआ़ला) **हैं(79) और** (एक क़ुदरत की दलील यह है कि) **अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारे वास्ते तुम्हारे घरों में रहने की जगह बनाई** (और सफ़र में) **तुम्हारे लिए जानवरों की खाल के घर** (यानी ख़ेमे या टेन्ट) **बनाए जिन को तुम अपने सफ़र के लिए रवाना होने के दिन और ठहरने के दिन हल्का** (फुल्का) **पाते हो** (और इस वजह से उस का ले जाना और गाड़ना आसान लगता है) **और उन** (जानवरों) **के ऊन उनके रूओं और उनके बालों से** (तुम्हारे) **घर का सामान और फ़ाइदे की चीज़ें एक ख़ास वक़्त तक के लिए**

बनाईं(80) **और** (एक नेमत यह है कि) **अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारे लिए अपनी पैदा की हुई कुछ चीज़ों के साये बनाए** (जैसे पेड़ व मकान) **और तुम्हारे लिए पहाड़ों में ठहरने की जगहें बनाईं** (यानी गुफ़ाएं जिसमें गर्मी, सर्दी, बारिश व दुशमन से बचाव कर सकें) **और तुम्हारे लिए ऐसे लिबास बनाए जो गर्मी** (और सर्दी) **से तुम्हारा बचाव करें और ऐसे लिबास** (भी) **बनाए जो तुम्हारी आपस की लड़ाई** (में ज़ख़्म लगने) **से तुम्हारा बचाव करें** (जैसे ज़रहें कवच्छ और बुलेट प्रूफ़ जैकेट हैं), **इसी तरह वो तुम पर अपनी नेमतें पूरी करता है कि तुम** (इन नेमतों के शुक्रिये में) **ताबेदार रहो** (यानी कि इनमें कुछ नेमतें बन्दों की बनाई हुई भी हैं मगर उन का सामान और उनके बनाने का सलीक़ा तो अल्लाह ही का पैदा किया हुआ है इसलिए असली नेमत देने वाले तो वो ही हैं)(81) **अगर ये लोग** (फिर भी) **ईमान से मुंह मोड़ें तो** (आप ग़म न करें आप का कोई नुक़सान नहीं क्योंकि) **आप के ज़िम्मे तो सिर्फ़ साफ़-साफ़ पहुंचा देना है**(82) (और इनके मुंह मोड़ने की वजह ये नहीं कि वो इन नेमतो को पहचानते नहीं बल्कि वो लोग) **अल्लाह की नेमतों को तो पहचानते हैं मगर पहचान कर फिर** (बरताव में) **उस का इनकार करते** (हैं यानी जो बरताव नेमतें देने वाले के साथ चाहिए था यानी इबादत व ताबेदारी वो दूसरे के साथ करते) **हैं और ज़्यादा उनमें ऐसे ही नाशुक्रे हैं**(83)।

नोटः- आयत में सुनने की नेमत का ज़िक्र किया बोलने की नेमत का नहीं क्योंकि सुनकर ही इन्सान बोलता है इसलिए जो गूंगे होते हैं वो बेहरे भी होते हैं।

وَيَوْمَ نَبْعَثُ مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيدًا ثُمَّ لَا يُؤْذَنُ لِلَّذِينَ كَفَرُوا وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُونَ ﴿٨٤﴾ وَإِذَا رَأَى الَّذِينَ ظَلَمُوا
الْعَذَابَ فَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ وَلَا هُمْ يُنْظَرُونَ ﴿٨٥﴾ وَإِذَا رَأَى الَّذِينَ أَشْرَكُوا شُرَكَاءَهُمْ قَالُوا رَبَّنَا هٰؤُلَاءِ
شُرَكَاؤُنَا الَّذِينَ كُنَّا نَدْعُوا مِنْ دُونِكَ ۚ فَأَلْقَوْا إِلَيْهِمُ الْقَوْلَ إِنَّكُمْ لَكٰذِبُونَ ﴿٨٦﴾ وَأَلْقَوْا إِلَى اللّٰهِ يَوْمَئِذٍ
السَّلَمَ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿٨٧﴾ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَنْ سَبِيلِ اللّٰهِ زِدْنٰهُمْ عَذَابًا فَوْقَ
الْعَذَابِ بِمَا كَانُوا يُفْسِدُونَ ﴿٨٨﴾ وَيَوْمَ نَبْعَثُ فِي كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيدًا عَلَيْهِمْ مِنْ أَنْفُسِهِمْ وَجِئْنَا بِكَ شَهِيدًا
عَلٰى هٰؤُلَاءِ ۗ وَنَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ تِبْيَانًا لِكُلِّ شَيْءٍ وَهُدًى وَرَحْمَةً وَبُشْرٰى لِلْمُسْلِمِينَ ﴿٨٩﴾ إِنَّ اللّٰهَ
يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْإِحْسَانِ وَإِيتَائِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَاءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ ۚ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ
تَذَكَّرُونَ ﴿٩٠﴾

आयत न० 84 से 90

और (वो दिन याद कीजिए) **जिस दिन हम हर-हर उम्मत में से एक-एक गवाह** (कि उस उम्मत का पैग़म्बर होगा) **खड़ा करेंगे** (जो उन के बुरे कामों की गवाही देंगे) **फिर उन काफ़िरों को** (मजबूरी जताने की) **इजाज़त नहीं दी जाएगी और न उन से अल्लाह तआ़ला को राज़ी करने को कहा जाएगा** (यानी न उन को तौबा करने की इजाज़त दी जाएगी)**(84) और जब ज़ालिम** (यानी काफ़िर) **लोग अज़ाब को देखेंगे** (यानी उस में पड़ेंगे) **तो वो अज़ाब न उन से हल्का किया जाएगा और न उन को कुछ मुहलत दी जाएगी** (कि कुछ दिन के बाद वो अज़ाब जारी किया जाए)**(85) और जब मुशरिक लोग अपने शरीकों को** (जिन को अल्लाह के सिवा पूजते थे) **देखेंगे तो** (जुर्म का इक़रार करते हुए) **कहेंगे कि या रब हमारे वो हमारे शरीक ये ही हैं कि आप को छोड़ कर हम इन को पूजा करते थे सो वो** (घड़े हुए शरीक डरेंगे और) **उन पर बात लौटाएंगे कि तुम बिल्कुल झूटे हो** (यानी हमारा तुम्हारा कोई वास्ता नहीं)**(86) और** (ये मुशरिक और काफ़िर लोग) **उस दिन अल्लाह के सामने ताबेदारी की बातें करने लगेंगे और जो कुछ दुनिया में झूट बान्धा करते थे** (उस वक़्त) **वो सब गुम हो जाएंगे(87)** (और) **उनमें जो लोग** (ख़ुद भी) **कुफ़्र करते थे** (और दूसरों को भी) **अल्लाह की राह** (यानी दीन) **से रोकते थे उनके लिए हम एक सज़ा पर दूसरी सज़ा बढ़ाते रहेंगे** (कि एक सज़ा कुफ़्र पर होगी दूसरी अल्लाह के रास्ते से रोकने की होगी) **क्योंकि वो फ़साद किया करते** (थे यानी अल्लाह की राह से रोकते) **थे(88) और** (वो दिन भी याद करने और लोगों को डराने का है) **जिस दिन हम हर-हर उम्मत का एक गवाह जो उन्हीं में का होगा उन के मुक़ाबिले में खड़ा करेंगे** (यानी उस उम्मत का पैग़म्बर) **और उन लोगों के मुक़ाबिले में** (ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **आप को गवाह बनाकर लाएंगे, हम ने आप पर क़ुरआन उतारा है जो कि** (मोजिज़ा यानी पैग़म्बरी का सबूत होने के साथ दीन की) **सभी बातों का** (साफ़-साफ़) **बयान करने वाला है और** (ख़ास) **मुसलमानों के लिए बड़ी हिदायत और बड़ी रहमत और** (ईमान पर) **ख़ुशख़बरी सुनाने वाला है(89) बेशक अल्लाह तआ़ला** (क़ुरआन में) **इन्साफ़ का व अहसान** (यानी भलाई करने) **का और रिशतेदारों को** (उनके हक़्) **देने का हुक्म देते हैं और खुली बुराई और बुरे काम और** (किसी पर) **ज़ुल्म करने** (और सताने) **से मना करते हैं** (और) **अल्लाह तआ़ला तुम को** (इन बातों की) **इसलिए नसीहत करते हैं ताकि तुम नसीहत मान लो** (और उस पर चलो)**(90)।**

नोटः- ''इन्नल्लाह्‌ यअ्मुरू बिल अदलि............ इस आयत को सुनकर हज़रत अकसम बिन सैफ़ी रज़ि० ईमान लाए और वो अपनी क़ौम के सरदार थे उन्होंने अपनी क़ौम को इस्लाम लाने के लिए तैयार किया। इस आयत में अल्लाह तआ़ला ने तीन चीज़ों का हुक्म दिया है इन्साफ़ करना, अहसान करना और रिशतेदारों के साथ अच्छा सलूक करना और तीन चीज़ों से मना किया है बेहयाई के काम और हर बुरा काम और ज़ुल्म।

وَ اَوْفُوْا بِعَهْدِ اللّٰهِ اِذَا عٰهَدْتُّمْ وَ لَا تَنْقُضُوا الْاَيْمَانَ بَعْدَ تَوْكِيْدِهَا وَ قَدْ جَعَلْتُمُ اللّٰهَ عَلَيْكُمْ كَفِيْلًا ؕ اِنَّ
اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا تَفْعَلُوْنَ ﴿۹۱﴾ وَ لَا تَكُوْنُوْا كَالَّتِيْ نَقَضَتْ غَزْلَهَا مِنْ بَعْدِ قُوَّةٍ اَنْكَاثًا ؕ تَتَّخِذُوْنَ اَيْمَانَكُمْ دَخَلًا
بَيْنَكُمْ اَنْ تَكُوْنَ اُمَّةٌ هِيَ اَرْبٰى مِنْ اُمَّةٍ ؕ اِنَّمَا يَبْلُوْكُمُ اللّٰهُ بِهٖ ؕ وَ لَيُبَيِّنَنَّ لَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ مَا كُنْتُمْ فِيْهِ
تَخْتَلِفُوْنَ ﴿۹۲﴾ وَ لَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَجَعَلَكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّ لٰكِنْ يُّضِلُّ مَنْ يَّشَآءُ وَ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَ
لَتُسْـَٔلُنَّ عَمَّا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۹۳﴾ وَ لَا تَتَّخِذُوْۤا اَيْمَانَكُمْ دَخَلًۢا بَيْنَكُمْ فَتَزِلَّ قَدَمٌۢ بَعْدَ ثُبُوْتِهَا وَ تَذُوْقُوا
السُّوْٓءَ بِمَا صَدَدْتُّمْ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ وَ لَكُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿۹۴﴾ وَ لَا تَشْتَرُوْا بِعَهْدِ اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِيْلًا ؕ اِنَّمَا عِنْدَ
اللّٰهِ هُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿۹۵﴾ مَا عِنْدَكُمْ يَنْفَدُ وَ مَا عِنْدَ اللّٰهِ بَاقٍ ؕ وَ لَنَجْزِيَنَّ الَّذِيْنَ صَبَرُوْۤا
اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۹۶﴾ مَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَ هُوَ مُؤْمِنٌ فَلَنُحْيِيَنَّهٗ حَيٰوةً
طَيِّبَةً ۚ وَ لَنَجْزِيَنَّهُمْ اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۹۷﴾

आयत न० 91 से 97

और तुम अल्लाह के एहद को (यानी जिस एहद और वादे के पूरा करने का अल्लाह ने हुक्म दिया है उस को) **पूरा करो** (इससे वो एहद निकल गया जो शरीअत के ख़िलाफ़ हो बाक़ी सब एहद इसमें दाख़िल हैं जो शरीअत के हिसाब से हों चाहे वो अल्लाह के हों या बन्दों के हों) **जब कि तुम उस को** (ख़ास कर) **अपने ज़िम्मे करलो** (इसमें ईमान लाने के बाद शरीअ़त के हुक्मों की पाबन्दी भी आ गई) **और क़समों को उनके पक्का करने के बाद** (यानी अल्लाह का नाम लेकर क़सम खाने के बाद) **मत तोड़ो और तुम** (इन क़समों की वजह से इन एहदों में) **अल्लाह तआ़ला को गवाह बना चुके हो, बेशक अल्लाह तआ़ला को पता है जो कुछ तुम करते हो** (बस जैसा करोगे वैसा बदला पाओगे)(91) **और तुम** (वादा तोड़ कर मक्के में रहने वाली) **उस** (पागल) **औरत**

के जैसा मत बनो जिसने अपना सूत (मेहनत से) **कातने के बाद तोड़ कर तार-तार कर दिया था, कि** (उस की तरह) **तुम** (भी) **अपनी क़समों को** (तोड़ कर उनको) **आपस में फ़साद डालने का सामान बनाने लगो** (क्योंकि वादा तोड़ने से आपस में मुख़ालफ़त बढ़ती है, और वो भी सिर्फ़ इसलिए कि) **एक गिरोह दूसरे गिरोह से बढ़ जाए, बस इससे अल्लाह तआ़ला तुम्हें आज़माता** (है कि देखें ख़ुदा का हुक्म समझ कर वफ़ादारी करता है या अपने मतलब के लिए एहद तोड़ता) **है, और जिन बातों में तुम झगड़ते रहे** (और अलग रास्तों पर चलते रहे) **क़ियामत के दिन उन सब** (की असलीयत) **को तुम्हारे सामने खोल देगा** (कि सच्चों को सवाब और झूटों को अज़ाब होगा)(92) **और अगर अल्लाह तआ़ला चाहते तो तुम सब को एक ही तरीक़े का बना देते** (कि उन को ये भी क़ुदरत थी कि अलग-अलग न होने देते) **लेकिन** (हिकमत से) **जिस को चाहते हैं बेराह कर देते हैं और जिसको चाहते हैं राह पर डाल देते हैं, और** (यहां सज़ा न होने से यह न समझना कि आख़रत में भी न होगी बल्कि क़ियामत में) **तुम से तुम्हारे सब कामों की ज़रूर पूछताछ होगी**(93) **तुम अपनी क़समों को आपस में फ़साद डालने का वास्ता मत बनाओ** (यानी क़समों और एहदों को मत तोड़ो) **कभी इस को देख कर किसी और के पांव जमने के बाद फिसल न जाएं** (यानी दूसरे भी तुम्हारी तरह वादा तोड़ने लगें) **फिर तुम को इस वजह से कि तुम** (दूसरों को) **अल्लाह की राह से रोकने वाले बने तकलीफ़ भुगतना पड़े, और** (इस हालत में) **तुम को बड़ा अज़ाब होगा**(94) **और तुम लोग अल्लाह के एहद के बदले में** (दुनिया का) **थोड़ा सा फ़ाइदा मत उठाओ, बस अल्लाह के पास जो चीज़ है** (यानी आख़रत का नफ़ा) **वो तुम्हारे लिए** (दुनिया के सामान से) **बहुत बढ़ कर है** (चाहे दुनिया का सामान कितना ही हो) **अगर तुम समझना चाहो**(95) (और) **जो कुछ तुम्हारे पास** (दुनिया में) **है वो** (एक दिन) **ख़त्म हो जाएगा** (चाहे फ़ना हो जाए या मौत आजाए) **और जो कुछ अल्लाह के पास है वो सदा रहेगा, और जो लोग** (दीन के हुक्मों पर) **मज़बूती से जमे हैं हम उन के अच्छे कामों के बदले में उनका बदला उन को ज़रूर देंगे**(96) **जो आदमी भी कोई नेक काम करेगा चाहे वो मर्द हो या औरत शर्त यह है कि ईमान वाला हो** (क्योंकि काफ़िर के भले काम क़ुबूल नहीं) **तो हम उस आदमी को** (दुनिया में तो) **चैन की ज़िन्दगी देंगे और** (आख़रत में) **उनके अच्छे कामों के बदले में उनका हक़ देंगे**(97)

नोटः- जिस काम का पूरा करना किसी आदमी के ज़िम्मे वाजिब हो वो अल्लाह का एहद उसके ज़िम्मे है उसके पूरा करने पर किसी से मुआवज़ा (महनताना) लेना और बिना लिए न करना अल्लाह का

एहद तोड़ना है। इसी तरह जिस काम का न करना किसी के ज़िम्मे वाजिब है किसी से मुआवज़ा लेकर उसको कर देना भी अल्लाह का एहद तोड़ना है। इससे मालूम हुआ कि रिशवत की सारी क़िसमें हराम हैं जैसा कि कुछ सरकारी मुलाज़िम सरकार से तनख़्वाह भी लेते हैं और रिशवत भी लेते हैं।

فَإِذَا قَرَأْتَ الْقُرْآنَ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ﴿٩٨﴾ إِنَّهُ لَيْسَ لَهُ سُلْطٰنٌ عَلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَلٰى رَبِّهِمْ
يَتَوَكَّلُوْنَ ﴿٩٩﴾ إِنَّمَا سُلْطٰنُهُ عَلَى الَّذِيْنَ يَتَوَلَّوْنَهُ وَالَّذِيْنَ هُمْ بِهِ مُشْرِكُوْنَ ﴿١٠٠﴾

आयत न० 98 से 100

(नेक कामों में क्योंकि शैतान कभी-कभी अड़चनें डालता है ऐसे ही क़ुरआन की तिलावत में भी वसवसे डालता है) **तो** (ऐ पैग़म्बर आप और आप के वास्ते से आप की उम्मत सुन लें कि) **जब आप क़ुरआन पढ़ना चाहें तो शैतान मरदूद** (की बुराई) **से अल्लाह की पनाह मांग लिया करें**(98) **बेशक उस का बस उन लोगों पर नहीं चलता जो ईमान रखते हैं और अपने रब पर** (दिल से) **भरोसा रखते हैं**(99) **उस का बस तो सिर्फ़ उन्हीं लोगों पर चलता है जो उससे ताल्लुक़ रखते हैं और उन लोगों पर** (चलता है) **जो कि अल्लाह के साथ शिर्क करते हैं**(100)।

नोटः- इस आयत में यह बात साफ़ कर दी गई कि अल्लाह तआ़ला ने शैतान को ऐसी ताक़त नहीं दी कि वो किसी भी इन्सान को बुराई पर मजबूर व बेबस कर दे जो इन्सान ख़ुद अपनी मर्ज़ी से उसके बहकाने में आजाए तो ये उस का क़ुसूर है।

मसअलाः- क़ुरआन की तिलावत में तिलावत से पहले अऊज़ुबिल्लाह पढ़ना सुन्नत है एक बार पढ़ लिया तो काफ़ी है लेकिन तिलावत को छोड़ कर किसी दुनिया के काम में लग जाए और दोबारा शुरू करे तो उस वक़्त दोबारा अऊज़ुबिल्लाह और बिस्मिल्लाह पढ़ना चाहिए। और तिलावते क़ुरआन के सिवा किसी दूसरे कलाम या किताब पढ़ने से पहले अऊज़ुबिल्लाह पढ़ना सुन्नत नहीं है वहां सिर्फ़ बिस्मिल्लाह पढ़ना चाहिए।

हदीसः- जब किसी को गुस्सा आए तो हदीस में है कि ''अऊज़ुबिल्लाह मिनश्शैतानिर्रजीम'' पढ़ने से गुस्से का ज़ोर दूर हो जाता है। (इब्ने कसीर)

وَ اِذَا بَدَّلۡنَاۤ اٰیَۃً مَّکَانَ اٰیَۃٍ ۙ وَّ اللّٰہُ اَعۡلَمُ بِمَا یُنَزِّلُ قَالُوۡۤا اِنَّمَاۤ اَنۡتَ مُفۡتَرٍ ؕ بَلۡ اَکۡثَرُہُمۡ لَا یَعۡلَمُوۡنَ ﴿۱۰۱﴾ قُلۡ
نَزَّلَہٗ رُوۡحُ الۡقُدُسِ مِنۡ رَّبِّکَ بِالۡحَقِّ لِیُثَبِّتَ الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا وَ ہُدًی وَّ بُشۡرٰی لِلۡمُسۡلِمِیۡنَ ﴿۱۰۲﴾ وَ لَقَدۡ نَعۡلَمُ اَنَّہُمۡ
یَقُوۡلُوۡنَ اِنَّمَا یُعَلِّمُہٗ بَشَرٌ ؕ لِسَانُ الَّذِیۡ یُلۡحِدُوۡنَ اِلَیۡہِ اَعۡجَمِیٌّ وَّ ہٰذَا لِسَانٌ عَرَبِیٌّ مُّبِیۡنٌ ﴿۱۰۳﴾ اِنَّ
الَّذِیۡنَ لَا یُؤۡمِنُوۡنَ بِاٰیٰتِ اللّٰہِ ۙ لَا یَہۡدِیۡہِمُ اللّٰہُ وَ لَہُمۡ عَذَابٌ اَلِیۡمٌ ﴿۱۰۴﴾ اِنَّمَا یَفۡتَرِی الۡکَذِبَ الَّذِیۡنَ لَا
یُؤۡمِنُوۡنَ بِاٰیٰتِ اللّٰہِ ۚ وَ اُولٰٓئِکَ ہُمُ الۡکٰذِبُوۡنَ ﴿۱۰۵﴾

आयत न० 101 से 105

और जब हम एक आयत को दूसरे से बदलते हैं (यानी एक आयत की जगह दूसरी आयत या दूसरा हुक्म भेज देते हैं) **और अल्लाह तआ़ला जो हुक्म** (पहली बार या दूसरी बार) **भेजता है** (उसकी मसलहत व भलाई को) **वो ही अच्छी तरह जानता है** (कि मसलहत बदलने के साथ हुक्म बदल देता है) **तो ये लोग कहते हैं कि** (अल्लाह की पनाह) **आप** (अल्लाह पर) **झूट बान्धने वाले** (हैं कि अपनी बात को अल्लाह की बताते हैं वर्ना अल्लाह का हुक्म होता तो इसके बदलने की क्या ज़रूरत थी क्या अल्लाह तआ़ला को इसका पहले पता न था। और ये लोग यह नहीं सोचते कि पहली हालत में पहला हुक्म दिया जाता है और दूसरी हालत में दूसरा हुक्म जब कि सब बातों का पहले से इल्म होता है जैसा कि डॉक्टर पहले एक दावा लिखता है और वो जानता है कि इसके बाद मरीज़ की हालत बदलेगी और दूसरी दवा दी जाएगी मगर मरीज़ को शुरू में सब बातें नहीं बताता, तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बात घड़ने वाले नहीं) **हैं, बल्कि उन्हीं में ज़्यादा लोग जाहिल** (हैं कि सही बात को समझते नहीं) **हैं(101) आप** (उनके जवाब में) **कह दीजिए** (कि यह कलाम मेरा बनाया हुआ नहीं बल्कि इसको) **रूहुल क़ुदुस** (यानी जिब्रील अ़लैहिस्सलाम) **आप के रब की तरफ़ से ठीक ठीक लेकर आए हैं** (इसलिए यह अल्लाह का कलाम है और इसमें हुक्म बदलने में कुछ भेद हैं और यह कलाम इसलिए भेजा गया है) **ताकि ईमान वालों को** (ईमान पर) **जमाए रक्खे और मुसलमानों के लिए हिदायत और ख़ुशख़बरी** (का सामान) **हो जाए(102) और हम को पता है कि ये लोग** (एक दूसरी ग़लत बात) **यह भी कहते हैं कि इनको तो आदमी सिखाता** (है यानी एक रोम का रहने वाला लुहार वो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बातें जी लगा कर सुनता तो हुज़ूर कभी-भी उसके पास जा बैठते और वो कुछ इन्जील भी जानता था इस पर काफ़िरों ने यह बात चलाई कि ये ही आदमी हुज़ूर को क़ुरआन का कलाम सिखाता) **है, जिस आदमी के बारे में कहते हैं उस की**

ज़बान तो अजमी है और यह कुरआन साफ़ अरबी है (कोई अजमी बेचारा ऐसा कलाम कैसे बना सकता है जिस का मुक़ाबिला करने से पूरा अरब लाचार हो गया)(103) **जो लोग अल्लाह की आयतों पर ईमान नहीं लाते उनको अल्लाह तआला कभी राह पर न लाएंगे और उनके लिए दर्दनाक सज़ा होगी**(104) (और ये लोग जो आपको अल्लाह पर झूट बान्धने वाला कहते हैं) **झूट बान्धने वाले तो ये ही लोग हैं अल्लाह की आयतों पर ईमान नहीं रखते और ये लोग पूरे झूटे हैं**(105)।

नोटः- इस तरह के ऐतराज़ और वसवसे इन्सान के दिल में शैतान डालता है।

مَنْ كَفَرَ بِاللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ اِيْمَانِهٖۤ اِلَّا مَنْ اُكْرِهَ وَ قَلْبُهٗ مُطْمَىِٕنٌّۢ بِالْاِيْمَانِ وَ لٰكِنْ مَّنْ شَرَحَ بِالْكُفْرِ
صَدْرًا فَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ مِّنَ اللّٰهِ ۚ وَ لَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿۱۰۶﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمُ اسْتَحَبُّوا الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا عَلَى
الْاٰخِرَةِ ۙ وَ اَنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿۱۰۷﴾ اُولٰٓىِٕكَ الَّذِيْنَ طَبَعَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ وَ سَمْعِهِمْ وَ اَبْصَارِهِمْ ۚ
وَ اُولٰٓىِٕكَ هُمُ الْغٰفِلُوْنَ ﴿۱۰۸﴾ لَا جَرَمَ اَنَّهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿۱۰۹﴾

आयत न० 106 से 109

जो आदमी ईमान लाने के बाद अल्लाह के साथ कुफ़्र करे (इसमें पैग़म्बर से कुफ़्र और क़ियामत का इनकार सब चीज़ें आ गईं) **वो नहीं जिस पर** (काफ़िरों की तरफ़ से) **ज़बरदस्ती की जाए** (कि अगर कुफ़्र का काम न किया तो तुझ को क़त्ल कर देंगे और इस बात का पूरा गुमान हो कि वो ऐसा कर सकते हैं) **शर्त यह है कि उस का दिल ईमान पर जमा हो** (यानी अक़ीदे में कोई गड़बड़ न आए और वो इस बात व इस काम को बड़ा गुनाह और बुरा समझता हो तो वो इस हुक्म से अलग है क्योंकि वो मजबूर है इसलिए यह सज़ा उसके लिए नहीं) **लेकिन हां जो जी खोल कर** (यानी उस कुफ़्र को ठीक और अच्छा समझ कर) **कुफ़्र करे तो ऐसे लोगों पर अल्लाह तआला का ग़ज़ब होगा और उन को बड़ी सज़ा होगी**(106) (और) **यह** (ग़ज़ब व अज़ाब) **इस वजह से होगा कि उन्होंने दुनिया की ज़िन्दगी को आख़रत के मुक़ाबिले में ज़्यादा प्यारी समझा और इस वजह से होगा कि अल्लाह तआला ऐसे काफ़िर लोगों को** (जो दुनिया को सदा आख़रत से प्यारी समझें) **हिदायत नहीं किया करता**(107) **ये वो लोग हैं कि** (कुफ़्र पर हटधर्मी की वजह से) **अल्लाह तआला ने उन के दिलों पर और कानों पर और आंखों पर बन्द लगा दिया है, और ये लोग**

(अन्जाम को) **बिल्कुल भूले हुए हैं**(108) (इसलिए) **ज़रूरी बात है कि आख़रत में ये लोग बिल्कुल घाटे में रहेंगे**(109)।

नोटः- ये आयत उन सहाबा किराम के बारे में उतरी जिन को मुशरिकों ने गरिफ़्तार कर लिया था और कहा था कि वो कुफ़्र का कलमा बोलें वर्ना क़त्ल कर दिये जाएंगे इन गरिफ़्तार होने वाले हज़रात में हज़रत यासर और हज़रत सुमय्या और हज़रत ख़ुबाब जिन्होंने शहीद हो जाना पसन्द किया और हज़रत सुमय्या को तो दो ऊंटों के बीच में बान्ध कर दौड़ाया गया जिससे उन के दो टुकड़े अलग- अलग हो कर शहीद हुईं। हज़रत अम्मार ने जान जाने के डर से ज़बानी कुफ़्र का इक़रार कर लिया मगर दिल उन का ईमान पर जमा हुआ था जब दुशमनों से रिहाई पाकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो बड़े दुःख और ग़म के साथ यह बात सुनाई रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उन को तसल्ली दी कि जब दिल ईमान पर जमा हुआ था तो तुम पर इसका कोई वबाल नहीं इस फ़ैसले की तस्दीक़ में ये आयत उतरी।

मसअलाः- इस आयत से साबित हुआ कि जिस आदमी को कुफ़्र का कलमा कहने पर इस तरह मजबूर कर दिया जाए कि अगर यह कलमा न कहे तो उस को क़त्ल कर दिया जाएगा और यह भी अन्दाज़ा हो कि धमकी देने वाल ऐसा कर सकता है तो ऐसी मजबूरी में अगर वो ज़बान से कुफ़्र का कलमा कहदे मगर उसका दिल ईमान पर जमा हो और उस कलमे को ग़लत और बुरा जानता हो तो उस पर कोई गुनाह नहीं और न उस की बीवी उस पर हराम होगी।

(क़रतबी व मज़हरी)

ثُمَّ اِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِيْنَ هَاجَرُوْا مِنْۢ بَعْدِ مَا فُتِنُوْا ثُمَّ جٰهَدُوْا وَ صَبَرُوْۤا ۙ اِنَّ رَبَّكَ مِنْۢ بَعْدِهَا لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝١١٠ ع
يَوْمَ تَاْتِيْ كُلُّ نَفْسٍ تُجَادِلُ عَنْ نَّفْسِهَا وَ تُوَفّٰى كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ وَ هُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ۝١١١ وَ ضَرَبَ اللّٰهُ
مَثَلًا قَرْيَةً كَانَتْ اٰمِنَةً مُّطْمَئِنَّةً يَّاْتِيْهَا رِزْقُهَا رَغَدًا مِّنْ كُلِّ مَكَانٍ فَكَفَرَتْ بِاَنْعُمِ اللّٰهِ فَاَذَاقَهَا اللّٰهُ
لِبَاسَ الْجُوْعِ وَ الْخَوْفِ بِمَا كَانُوْا يَصْنَعُوْنَ ۝١١٢ وَ لَقَدْ جَآءَهُمْ رَسُوْلٌ مِّنْهُمْ فَكَذَّبُوْهُ فَاَخَذَهُمُ الْعَذَابُ وَ
هُمْ ظٰلِمُوْنَ ۝١١٣

आयत न० 110 से 113

फिर (अगर कुफ़्र के बाद ये लोग ईमान ले आएं तो) **बेशक आप का रब ऐसे लोगों के लिए कि जिन्होंने कुफ़्र में पड़ने के बाद** (ईमान लाकर) **हिजरत की फिर जिहाद किया और** (ईमान पर) **जमे रहे तो आप का रब** (ऐसे लोगों के लिए) **उन** (कामों) **के बाद बड़ा मुआफ़ करने वाला बड़ी रहमत करने वाला है** (यानी ईमान और नेक कामों की बरकत से सब पिछले गुनाह मुआफ़ हो जाएंगे और अल्लाह तआला की रहमत से उन को जन्नत में बड़े-बड़े दर्जे मिलेंगे)(110) **जिस दिन हर आदमी अपनी ही तरफ़दारी में बात करेगा** (और दूसरों को न पूछेगा यह फ़ैसला उस दिन होगा) **और हर आदमी को उसके किये का पूरा बदला मिलेगा** (यानी नेकी के बदले में कमी नहीं होंगी चाहे अल्लाह की रहमत से ज़्यादा हो जाए) **और** (बुराई के बदले में ज़्यादती न होगी हां यह हो सकता है रहमत से उसमें कुछ कमी हो जाए ये ही मतलब है इसका कि) **उन पर ज़ुल्म न किया जाएगा(111) और** (कुफ़्र व गुनाह की पूरी सज़ा आख़रत में होगी मगर कभी दुनिया में इसका वबाल अज़ाब की सूरत में आजाता है जैसे) **अल्लाह तआला एक ऐसी बस्ती वालों का हाल बयान करते हैं कि वो** (बड़े) **अमन चैन में रहते थे** (और) **उनके खाने पीने की ख़ूब चीज़ें चारों तरफ़ से उनके पास पहुंचा करती थीं** (उन लोगों ने अल्लाह की नेमतों का शुक्र अदा न किया बल्कि) **उन्होंने अल्लाह की नेमतों की नाशुक्री की** (यानी कुफ़्र व शिर्क और गुनाह के काम किये) **इस पर अल्लाह तआला ने उनको उनके** (बुरे) **कामों की वजह से भुकमरी और डर का मज़ा चखाया** (कि माल व दौलत छीन कर ग़रीबी व भुकमरी में पकड़े गये और दुशमनों का डर बैठा कर बस्तियों का अमन चैन भी छीन लिया)(112) **और** (इस सज़ा में अल्लाह तआला की तरफ से कुछ जल्दी नहीं की गई बल्कि पहले इसकी नसीहत व सुधार के वास्ते) **उनके पास उन्हीं में का एक पैग़म्बर भी** (अल्लाह की तरफ़ से) **आया** (जिस की सच्चाई को वो अपनी क़ौम में का होने की वजह से पूरी तरह जानते थे) **सो उस** (पैग़म्बर) **को** (भी) **उन्होंने झूटा बताया तब उन को अज़ाब ने आ पकड़ा जब कि वो बिल्कुल ही ज़ुल्म पर कमर बान्धने लगे**(113)।

नोटः- मक्के में अकाल पड़ा लोग भूके मरने लगे मुरदार जानवर खाने पर मजबूर हो गये तो अबूसुफ़यान ने कुफ़्र की हालत में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से दुआ की दरख़्वास्त की आप ने उनके लिए दुआ की और अकाल ख़त्म हुआ। (क़ुरतबी)

فَكُلُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ حَلٰلًا طَيِّبًا ۪ وَّ اشْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ اِيَّاهُ تَعْبُدُوْنَ ﴿١١٤﴾ اِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ
الْمَيْتَةَ وَ الدَّمَ وَ لَحْمَ الْخِنْزِيْرِ وَ مَاۤ اُهِلَّ لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ ۚ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَّ لَا عَادٍ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ
رَّحِيْمٌ ﴿١١٥﴾ وَ لَا تَقُوْلُوْا لِمَا تَصِفُ اَلْسِنَتُكُمُ الْكَذِبَ هٰذَا حَلٰلٌ وَّ هٰذَا حَرَامٌ لِّتَفْتَرُوْا عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ ؕ اِنَّ
الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُوْنَ ﴿١١٦﴾ؕ مَتَاعٌ قَلِيْلٌ ۪ وَّ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿١١٧﴾ وَ عَلَى الَّذِيْنَ هَادُوْا
حَرَّمْنَا مَا قَصَصْنَا عَلَيْكَ مِنْ قَبْلُ ۚ وَ مَا ظَلَمْنٰهُمْ وَ لٰكِنْ كَانُوْۤا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿١١٨﴾ ثُمَّ اِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِيْنَ
عَمِلُوا السُّوْٓءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابُوْا مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ وَ اَصْلَحُوْۤا ۙ اِنَّ رَبَّكَ مِنْۢ بَعْدِهَا لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١١٩﴾ ۧ

आयत न० 114 से 119

जो चीज़ें तुम को अल्लाह ने हलाल और पाक दी हैं उन को (हराम न समझो यह मुशरिकों का तरीक़ा है बल्कि) **उन को खाओ, और अल्लाह की नेमतों का शुक्र** (अदा) **करो अगर तुम** (सचमुच) **उसी की इबादत करते हो(114) तुम पर तो** (उन चीज़ों में से जिन को तुम हराम कहते हो अल्लाह तआ़ला ने) **मुरदार को हराम किया है और ख़ून को और सुअर के गोश्त को और जिस चीज़ पर अल्लाह के सिवा किसी और का नाम पुकारा गया हो, फिर जो आदमी कि** (भूक की वजह से) **बिल्कुल बेचैन हो जाए शर्त यह है कि मज़ा न चाहता हो और न** (ज़रूरत की) **हद से बढ़ने वाला हो तो अल्लाह तआ़ला** (उसके लिए अगर वो इन चीज़ों को खाले) **मुआ़फ़ करने वाला महरबानी करने वाला है(115) और जिन चीज़ों के बारे में सिर्फ़ तुम्हारा झूटा ज़बानी दावा है** (और उस पर कोई सही दलील नहीं) **उन के बारे में ऐसा न कह दिया करो कि यह चीज़ हलाल है और यह चीज़ हराम है जिस का मतलब यह होगा कि तुम अल्लाह पर झूटी बात घड़ोगे** (क्योंकि अल्लाह तआ़ला ने तो ऐसा नही कहा), **बेशक जो लोग अल्लाह पर झूट लगाते हैं वो कामयाब न होंगे** (चाहे दुनिया व आख़रत दोनों में या सिर्फ़ आख़रत में)(116) **यह** (दुनिया में) **कुछ दिन की ऐश है** (और आगे मरने के बाद) **उनके लिए दर्दनाक सज़ा है(117) और** (ये मुशरिक लोग दीने इब्राहीमी पर चलने का दावा करते हैं जब कि उन की शरीअ़त में तो ये चीजें हराम न थीं जिनको उन्होंने हराम ठहरा दिया है लेकिन बहुत ज़माने के बाद उन चीज़ों में से) **सिर्फ़ यहूदियों पर हम ने वो चीज़ें हराम कर दी थीं जिन का बयान हम इसके पहले** (सूरत अनआम में) **आप से कर चुके हैं और** (उनके हराम करने में भी) **हम ने उन पर कोई**

ज़ुल्म नहीं किया लेकिन वो ख़ुद ही (पैग़म्बरों की मुख़ालफ़त करके) **अपने ऊपर ज़ुल्म किया करते थे**(118) **फिर** (भी) **आप का रब ऐसे लोगों के लिए जिन्होंने जहालत से बुरा काम** (चाहे कुछ भी हो) **कर लिया फिर उसके बाद तौबा करली और** (आगे के लिए) **अपने को सुधार लिया तो आप का रब उसके बाद बड़ा मुआ़फ़ करने वाला बड़ी रहमत वाला है**(119)।

नोटः- तौबा से गुनाह की मुआ़फ़ी आम है चाहे बेसमझी से करे या जान बूझकर क्योंकि गुनाह का काम करना तो जहालत ही की बात है।

إِنَّ إِبْرٰهِيمَ كَانَ أُمَّةً قَانِتًا لِّلّٰهِ حَنِيفًا ۖ وَلَمْ يَكُ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿١٢٠﴾ شَاكِرًا لِّأَنْعُمِهِ ۚ اجْتَبٰهُ وَهَدٰهُ إِلٰى
صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿١٢١﴾ وَاٰتَيْنٰهُ فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً ۖ وَإِنَّهُ فِي الْاٰخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِينَ ﴿١٢٢﴾ ثُمَّ أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ أَنِ
اتَّبِعْ مِلَّةَ إِبْرٰهِيمَ حَنِيفًا ۖ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿١٢٣﴾ إِنَّمَا جُعِلَ السَّبْتُ عَلَى الَّذِينَ اخْتَلَفُوا فِيهِ ۚ وَإِنَّ
رَبَّكَ لَيَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿١٢٤﴾

आयत न० 120 से 124

बेशक इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम जिन को तुम भी मानते हो) **बड़े इमाम** (यानी बड़े पैग़म्बर और) **अल्लाह तआ़ला के पूरे ताबेदार थे** (उन का कोई अक़ीदा या अमल अपनी मर्ज़ी से न था और वो) **बिल्कुल एक** (अल्लाह) **की तरफ़ हो रहे थे, और** (मतलब एक तरफ़ होने का यह है कि) **वो शिर्क करने वालों में से न थे** (तो फिर तुम शिर्क कैसे करते हो)(120) **अल्लाह की नेमतों के** (वो बड़े) **शुक्र अदा करने वाले थे** (फिर तुम शिर्क व कुफ़्र करके नाशुक्री क्यों करते हो, और) **अल्लाह तआ़ला ने उन को चुन लिया था और उनको सीधे रास्ते पर चलाया**(121) **और हमने उन को दुनिया में भी भलाई दी थी** (जैसे पैग़म्बरी के लिए चुना जाना और हिदायत पर होना) **और वो आख़िरत में भी** (ऊंचे दर्जे के) **अच्छे लोगों में होंगे** (इस लिए तुम सब को उन्हीं के तरीक़े पर चलना चाहिए और वो तरीक़ा अब मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का तरीक़ा है)(122) **फिर हमने आप के पास वही भेजी कि आप इब्राहीम के तरीक़े पर चलिए जो कि बिल्कुल एक** (अल्लाह) **की तरफ़ हो रहे थे, और** (चूंकि उस ज़माने के वो लोग जो दीने इब्राहीमी पर चलने का दावा करते थे कुछ न कुछ शिर्क में पड़ गये थे इसलिए फिर कहा कि) **वो शिर्क करने वालों में से न थे**(123)

बस हफ़्ते के दिन की इ़ज़्ज़त करना (यानी हफ़्ते के दिन मच्छली के शिकार की पाबन्दी वो तो) **सिर्फ़ उन्हीं लोगों पर ज़रूरी की गई थी जिन्होंने उसमें मुख़ालफ़त की थी** (कि किसी ने माना किसी ने नहीं माना), **और बेशक आप का रब क़ियामत के दिन उनमें आपस में फ़ैसला कर देगा जिस में ये** (दुनिया में) **मुख़ालफ़त किया करते थे(124)।**

नोटः- यहां यह भी मालूम हुआ कि जो लोग हज़रत इब्राहीम को बड़ा मानते हैं तो वो अपने दावे में तभी सच्चे हो सकते हैं जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाएं और आपकी ताबेदारी करें।

اُدْعُ اِلٰى سَبِيْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ وَجَادِلْهُمْ بِالَّتِىْ هِىَ اَحْسَنُ ؕ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ
ضَلَّ عَنْ سَبِيْلِهٖ وَهُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ ﴿۱۲۵﴾ وَاِنْ عَاقَبْتُمْ فَعَاقِبُوْا بِمِثْلِ مَا عُوْقِبْتُمْ بِهٖ ؕ وَلَئِنْ صَبَرْتُمْ
لَهُوَ خَيْرٌ لِّلصّٰبِرِيْنَ ﴿۱۲۶﴾ وَاصْبِرْ وَمَا صَبْرُكَ اِلَّا بِاللّٰهِ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُ فِىْ ضَيْقٍ مِّمَّا يَمْكُرُوْنَ ﴿۱۲۷﴾
اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا وَّالَّذِيْنَ هُمْ مُّحْسِنُوْنَ ﴿۱۲۸﴾ ع

आयत न० 125 से 128

आप अपने रब की राह (यानी दीन इस्लाम) **की तरफ़** (लोगों को) **हिकमत और नसीहत के साथ बुलाइये** (हिकमत से दावत का वो तरीक़ा मुराद है जिसमें हालत को ध्यान में रखते हुए ऐसे दावत दी जाए जो दिल पर असर करे और अच्छी नसीहत से मुराद है कि हमदर्दी से बात की जाए बात भी नर्म हो दिल दुखाने वाली या तौहीन करने वाली न हो) **और उनके साथ अच्छे तरीक़े से बहस कीजिए** (यानी अगर बहस करने की नौबत आजाए तो वो भी सख़्ती और बेइन्साफ़ी से न होना चाहिए बस इतना काम आप का है और किस ने माना किसने नहीं इस फ़िक्र में न रहिए, क्योंकि) **बेशक आप का रब अच्छी तरह जानता है उस आदमी को भी जो उस के रास्ते से भटक गया और वो ही राह पर चलने वालों को भी अच्छी तरह जानता है(125) और** (अगर मुख़ालिफ़ लोग सताने लगें तो आप को और आपके मानने वालों को बदला लेना भी जाइज़ है और सब्र करना भी बस) **अगर बदला लेने लगो तो उतना ही बदला लो जितना तुम्हारे साथ बरताव किया गया है** (उससे ज़्यादती न करो), **और अगर** (सताने पर) **सब्र करो तो वो** (सब्र करना) **सब्र करने**

वालों के हक़ में बहुत ही अच्छी बात (है कि मुख़ालिफ़ पर भी अच्छा असर पड़ता है और देखने वालों पर भी और आख़रत में बहुत बड़ा सवाब मिलता) **है**(126) **और** (आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ख़ास कर हुक्म है कि आप बदला न लें और न यह आप की शान है कि आप बदला लें बल्कि) **आप सब्र कीजिए और आप का सब्र करना अल्लाह ही की ख़ास मदद से है** (इसलिए आप तसल्ली रक्खें कि सब्र में आप को परीशानी न होगी) **और उन लोगों पर** (यानी उन के ईमान न लाने पर या मुसलमानों को सताने पर) **ग़म न कीजिए और जो कुछ ये चालें किया करते हैं उससे न कुढ़िये**(127) (उन की मुख़ालिफ़ चालों से आप का कुछ नुक़सान न होगा क्योंकि) **अल्लाह तआ़ला ऐसे लोगों के साथ होता है** (यानी उन का मददगार होता है) **जो परहेज़गार होते हैं और नेक काम करते हैं**(128)।

नोटः- इमाम शाफ़ई रह० ने कहा है जिस आदमी को किसी ग़लती पर रोकना हो अगर तुमने उसको अकेले में नर्मी के साथ समझाया तो यह नसीहत है और अगर ऐलानिया लोगों के सामने उसको रूसवा किया तो यह फ़ज़ीहत (और बदनाम करना) है।